SHREE SWAMINARAYAN
શ્રી સ્વામિનારાયણ

Rs. 5/-

December '06



પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીના દિવ્ય સંકલ્પ એવા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમનું કામ ધમધોકાર ચાલી રહ્યું છે. તેનું નિરીક્ષણ કરી એન્જીનીયર સાથે ચર્ચા કરતાં પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી

પ્રકાશક:- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧ Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



छपैया में प्रदर्शन का उद्घाटन करते हुए मुख्य यजमानश्री तथा पू. ब्रह्मचारी स्वामी रामकृष्णानंदजी ।



छपैया में उत्सव के दरम्यान भक्तों की भारी भीड के बीच दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



वयोवृद्ध ब्रह्मचारी स्वामी रामकृष्णानंदजी का सन्मान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री द्वारा किाय गया ।



श्री नरनारायणदेव स्कीम कमिटी के सभ्यों के साथ छपैया में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



प्राकट्यभूमि में २२५ वे जन्मोत्सव के प्रसंग पर प्रसाद का वितरण करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



छपैया में विशाल सभामंडप में कथा श्रवण करते हुए श्रोतागण ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४१९५९७ - ९८२५३०९५९७
फेक्स : २७४१९५९७

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी आज्ञासे

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
प्रति वर्ष ५०-००
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश ५०००-००
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

पत्तेमे परिवर्तन के लीये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ५ दिसम्बर -२००६

अ नु क्र म णि का

१.	अरमदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की मोरेश्यस-सिसल्य धर्मयात्रा	६
४.	अनोखी टेक	८
५.	भक्तवर्मा श्रीहरि	९
६.	श्री घनश्याम महाराज का रजत द्विशताब्दी महोत्सव "जन्मभूमि में जन्मजयंती"	११
७.	अन्य संप्रदायेषु स्वामिनारायण संप्रदायस्य वैदिकत्वं भगवतः स्वामिनारायणस्य भगवत्ताच ॥	१३
८.	सत्संग सुरभि : हरिचरण के प्रति स्नेहभाव ही यथार्थ मोक्ष है	१६
११.	सत्संग बालवाटिका (१) माला कैसे फेरना चाहिए (२) सेवा का महामंत्र	१७
१२.	प्रश्नपेटी	१९
१३.	भक्तिसुधा (१) घनश्याम कहाँ है ? (२) वनविचरण (३) आइये ज्ञान यज्ञ मे	२०
१४.	समाचार वृत्तांत	२३

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : sntemple@hotmail.com
www.swaminarayanmuseum.com / org

अस्मदीयम् तन्त्रीश्री की तरफ से.....

अपने शास्त्रों में मनुष्य देह दुर्लभ है ऐसा कहते हुए प्रमाण दिया गया है कि "दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षण भंगुरः ।" देहधारी प्राणियों में मनुष्य देह अति दुर्लभ है । कारण यह कि दूसरे देहधारियो से पंचविषय के सुख तो भोगे जासकते हैं । परंतु उस में अपने ही आत्माके सुख के लिये विचार करने का साधन बिल्कुल नहीं है । जब कि मनुष्य नाम धारी शरीर से आत्मश्रेय बडी सरलता से किया जा सकता है । इसीलिये देवताओं कीअमरशरीर होते हुएभी क्षण भंगुर मनुष्य की शरीर धारण करने की भावना बनी रहती है । क्योंकि यह बहुत महत्व की शरीर है । फिर भी इस शरीर का कहाँ और कब अंत आजायेगा, इसकी जानकारी किसी को भी आजतक नहीं हो सकी । इसलिये जिस हेतु से मानव शरीर की दुर्लभता कही है, उस आत्मा का श्रेय सिद्ध कर लेना चाहिए । ईश्वर भक्ति ही एकमात्र आत्मश्रेय का अति सरल तथा मुख्य साधन है यही सभी शास्त्रों का रहस्य है ।

अपने इष्टदेव परमकृपालु परमात्मा सर्वोपरि श्रीहरि की भजन करना ही एकमात्र आत्म कल्याण का मार्ग है । उस साधन को नवधाभक्ति मे जो साध्यस्य प्रेम लक्षणा भक्ति है उसे प्राप्त करके श्रेय करलेना चाहिये । १६ दिसम्बर से पवित्र धनुर्मास प्रारम्भ हो रहा है, जो जगत के जीवों के लिये कुमुहूर्त मास कहा गया है, किन्तु भगवान के भक्तों के लिये तो यह उत्सव मास कहा गया है - क्योंकि यही एकमात्र मास है जिसमें उन्मुक्त होकर भक्तजन भगवान की भक्ति करते हैं । इसलिये भगवान के आश्रित जनो को चाहिये कि प्रातः काल ब्राह्म मुहूर्त में उठकर मंदिर के प्रांगण में आकर परमेश्वर के मंगलमय नाम स्मरण में जुडजाय । स्वामिनारायण भगवान की यही आज्ञा है । पवित्र धनुर्मास में श्रीहरिने अपनी बांहो में जिन परमकृपालु परमात्मा परब्रह्म भगवान श्री नरनारायणदेव कीमूर्ति को अपने स्वस्य के स्य में प्रतिष्ठित किया हैं, उन्ही के समक्ष सभामंडप में आकर धुनि-कीर्तन-कथा-प्रवचन में सम्मिलित होकर भगवान श्रीहरि की कृपा प्राप्त करले, यही मनुष्य जीवन की सफलता का रहस्य है - यही पाथेय है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

नवम्बर -२००६

२. से १२-११-०६ मोरेश्यस एवं सिसल्स टापु में सत्संग प्रचारार्थ विचरण ।

१३-१४ भुज (कच्छ) पदार्पण ।

१६. श्री भरतभाई शीवाभाई पटेल के यहाँ कलोल गाँव में महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।

१७. चलोडा (जीतबा का धोलकादेश) गाँव में श्री संदीपकुमार चन्द्रकांतभाई अमीन के यहाँ पदार्पण ।

२०. श्री नवीनचंन्द्र मगनलाल चौकसी के यहाँ पदार्पण, नारायणपुरा ।
श्री रजनीकांत वनमालीदास परमार के यहां पदार्पण, नवावाडज ।

२१. विरमगांव श्री बाबुलाल त्रिकमभाई ठक्कर के यहाँ तुलसी विवाह यज्ञोपवीत प्रसंग पर आशीर्वाद देने हेतु पदार्पण ।

२३. श्री भरतसिंह हालुभा वाघेला के यहाँ पदार्पण, इयावा (साणन्द)
श्री कांतिलाल चिमनलाल पंड्या के यहाँ पदार्पण, साबरमती ।

२५. श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
बालवा गाँव में श्री विक्रमभाई गोबरजी भाटी के यहाँ पदार्पण।
श्री नटवरभाई बेचरदास पटेल के यहाँ पदार्पण, सोला रोड ।

२६. भाऊपुरा गाँव में श्री महेन्द्रभाई शिवदास पटेल के यहाँ पदार्पण ।
श्री नीलकंठ महादेव पदार्पण, घाटलोडिया ।
श्री रमेशभाई बलदेवभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, वेजलपुर ।
श्री परसोत्तमभाई धनजीभाई खोलिया के यहाँ पदार्पण, जीवराजपार्क ।

२७. वडुश्री स्वामिनारायण मंदिर श्री हनुमानजी मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर पादर्पण ।

२८. श्री त्रिभुवनभाई परसोत्तमभाई मिस्त्री के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण, लखतर-मूलीदेश ।

२९. श्री कमलेशभाई हिंमतलाल टांक के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण, असारवा ।
श्री अजीतसिंह रामाजी डाभी के यहाँ पदार्पण, असारवा ।

३०. श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के मोरेश्यस और सिसल्स की धर्मयात्रा के प्रसंग पर वहाँ के राजकीय धार्मिक और विविधक्षेत्र के उद्योगपतियोंने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की बहुत ही निकटता से दर्शन करके अपने निवास स्थान पर पदार्पण करवाकर बहुत ही प्रभावित हुए थे । प.पू. आचार्य महाराजश्री स्वदेश पधारे उसके बाद वहाँ के लोगोंने भावनाओं और आत्मीयता से प्रेरित होकर पत्र ई-मेल द्वारा पू. महाराजश्री को अपनी भावना शुभेच्छा की जानकारी प्रदान की उन पत्रों का सारांश है ।

ALLIED BUILDERS (SEYCHELLES) LIMITED

www.alliedbuilders-seychelles.com

P. O. Box 215, Les Mamelles, Mahe, Seychelles.

Your message through Seychelles Broadcasting Corporation and the local daily has reached a wide cross section of society including Christen Brethren.

There was a deluge of letters and telephone calls from dignitaries and other people who had the God sent opportunity to have your Dharshan and glimpse of your presence. Few of such letters received from devotees are enclosed for your kind perusal.

All of us feel rejuvenated, motivated and spiritually enriched and are swayed by your Holiness' politeness grace and composure. Your message of "God is one and we are all trying to reach Him" is still reverberating in our ears.

National Assembly of Seychelles

The Speaker

It was interesting for us Seychellois present and particularly people of leadership to experience the Indo Hindu spirituality and culture at first hand in an authentic environment.

For me and my wife, if was an honour and a welcome insight both culturally and spiritually.

Hon. F. MacGregor
SPEAKER

Republic of Seychelles

Ministry of Community Development and Youth

His Holiness' presence was truly remarkable drawing devotees to him and I personally witnessed the cheerful faces of people who were blessed by His Holiness.

Yours sincerely

Vincent Meriton

CHIEF JUSTICE'S CHAMBERS
SUPREME COURT
VICTORIA, MAHE
SEYCHELLES

I was struck with the divinity of his Holiness, I noticed an aura of peace, tranquility which his Holiness was able to permeate to all those who were able to have his darshan.

I consider myself very forrunate to have been able not only to have a glimpse of his Holiness but to have been permitted to have a short conversation with Him.

His Holiness' pleasant personality is a pulling force which draws people to Him without any effort on his part. I felt myself being drawn to Him and could lay at his feet and forget about all worldly cares.

Yours Sincerely
V. Alleear
Chief Justice

High Commission of India

P.O. Box No.488, Le Chantier

People of Seychelles – especially the Indian immigrant labour – found immense relief and solace in the holy presence of Acharyaji.

(Arun Kumar Goel)
High Commissioner

Justice D. Karunakaran

JUDGE
SUPREME COURT

Your dicourse fine-tuned our spiritual station.

For me personally, it was a great honour and a very special privilege to have been asked to sit at the left of His Holiness. We had the opportunity to exchange in fraternal conversations. Unforgettable ! I am very thankful.

Father Gustave Lafortune,
Good Shepherd Church,
Mont Fleuri, 28-11-2006.

SEYCHELLES HINDU KOVIL SANGAM

On behalf of the Sangam I wish to thank you for the opportunity given to us to honour His Holiness and receive his blessings.

T. SHANMUGAM PILLAY
CHAIRMAN

RAMANI & COMPANY

CHARTERED ACCOUNTANTS

We saw the Heavenly Light in His eyes, Godly Politencess, Charm and Calmness of a silent stream in His face and over powering strength in His Discourse.

N. Ramani
Chartered Accountant

MINISTRY OF HEALTH
P.O. Box 52, Mont Fleuri, Republic of Seychelles
Seychelles Telephone (248) 388000. Fax: (248) 224792
Email: dgpri@moh.gov.sc

H.H. Acharya Maharajshri blessings with the divine light in his eyes with calmness gave much to us the spiritual renaissance and the experience of it's memory will last forever as long as we live.

Dr. V. M. Reddy
ACCIDENT & EMERGENCY UNIT
VICTORIA HOSPITAL MAHE SEYCHELLES

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की

मोरेश्यस-सिसल्य धर्मयात्रा

- शास्त्री श्रीजीप्रकाशदास (हाथीजण गुरुकुल)

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान का नाम पत्ते-पत्ते पर लिया जायेगा यह युक्ति वास्तव में साकार होती जा रही है। देश-विदेश में मूल संप्रदाय के आश्रित कोई व्यापार के हेतु, या कोई नौकरी हेतु अथवा कोई डॉक्टर ईन्जिनीयर जैसे बुद्धिजीवी और श्रमजीवी लोग विदेश में स्थायी हुए है। परंतु भौतिकवादी देशो में वे धर्म-संप्रदाय को भूले नही है। यह एक गौरव की बात है। श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति श्रीहरि के छठ्ठे वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने विश्व के धनाढ्य और समृद्ध ऐसे अमेरिका खंड में आज से ३४ वर्ष पहले I.S.S.O. की स्थापनां की थी। तब किसी को भी कल्पना भी नहीं थी कि वहाँ इतनी अधिक मात्रा में विशाल मंदिरो का निर्माण होगा। लाखो की संख्या में श्री नरनारायणदेव के आश्रित बनेंगे। इसका समस्त श्रेय हमारे प.पू. बड़े महाराजश्री और वर्तमान प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के संकल्प के बल पर सिद्ध हुआ है। क्योंकि उनका संकल्प सर्वोपरि श्रीजी महाराज का संकल्प ही तो है।

अमेरिका और ईंग्लेन्ड, ईस्ट आफ्रिका, (केनिया) मिडल इस्ट, ओस्ट्रेलिया, न्युझीलेन्ड और स्वीडन आदि देशों में हमारे अनेक मंदिरो का निर्माण हुआ है। तथा हाल ही में अनेक मंदिरो का निर्माण कार्य चालू है। इतने अधिक मंदिर होने के कारण किसी न किसी देश में पाटोत्सव-प्रतिष्ठा-पारायण जैसे अनेक उत्सव के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी जाया करते हैं। इसबार की यात्रा में साथ में शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण गुरुकुल) स्वामी नारायणस्वरूपदासजी (प्रयाग मंदिर, महंतश्री) कोठारी स्वामी आनंदप्रसाददासजी (मथुरा महंतश्री) आदि संत मंडल के साथ ता. २-११-२००६ के दिन अहमदाबाद से मोरेश्यस प्रस्थान किये।

हमारी जो परंपरागत संस्कृति है उससे जुडकर हमारे सत्संगी भाई, बहन, कुटुंब तथा सगे-सबंधियों के प्रति प्रेम के यथार्थ डोर से बंधकर इस जीवन को सार्थक करने हेतु भगवान श्री स्वामिनरायण द्वारा सूचित राह पर तथा प्रवर्तमान रीति को अपनाकर सत्संग के पीयूष का पान करवाकर तथा सर्वोपरि श्री नरनारायमदेव की मूर्ति को अखंड अंतर में उतारकर भगवान का सुख प्राप्त कर लेते है। ऐसा शुभ संदेश विदेश में बसने वाले एक-एक हरिभक्त को मिले इस हेतु से सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण की पहचान करवाने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशेलन्द्रप्रसादजी महाराजश्री, संतगण मोरेश्यस, सिसल्स और प्राले टापू आदि कई स्थलों पर ता. २-११-२००६ से ता. ११-११-२००६ तक सत्संग प्रचार हेतु पधारे थे।

प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा संतो का मोरेश्यस के हरिभक्तोने पूज्य आचार्य माराजश्री तथा संतो का एरपोर्ट पर भव्य-स्वागत किया। वहाँ से अपने मोरेश्यस श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू. महाराजश्री तथा संतगण पधारे थे। वहाँ प्रातः में पूजापाठ करके भक्तजनो के प्रेम के वश होकर पूज्यपाद महाराजश्री के सभा में बिराजमान होने पर चरण स्पर्श करके दर्शन का लाभ प्राप्त किया था।

मध्याहन के बाद मोरेश्यस में रहनेवाले प.भ. के. के. पटेल की साईड पर प.पू. महाराजश्री पधारे थे। साम को मंदिर में संध्या आरती परम पूज्य महाराजश्री ने उतारी थी। और संध्या वंदन करके हरिभक्तो की विशाल सभा में पूज्य महाराजश्रीका आसन ग्रहण किया था। सभा में हरिभक्तों ने प.पू. महाराजश्रीने पूजन अर्चन करके आरती उतारकर फूलहार से स्वागत करके तथा संतो का भी फूलहार से स्वागत किया गया। विशाल सभा में आशीर्वाद देते हुए आचार्य महाराजश्रीने कहा हमको मिला हुआ भगवान का स्वरूप चिंतामणी तुल्य है। हमारे पूर्वजों ने इस मूर्ति का चिंतन करके इसलोक-परलोक में सुखी हुए है। आप सभी को यथार्थ रूप से महाराज का स्वरूप जीवन में रखना चाहिए। ता. ४-११-०६ के दिन प्रातःकाल श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा का शुभ प्रारंभ प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से हुआ। कथा के वक्ता शास्त्री स्वामी श्रीजीप्रकादासजी ने अपनी सुमधुर शैली में कथामृत का पान करवाया। मध्याहन के बाद प.पू. महाराजश्री संत हरिभक्तों के साथ यहाँ देखने वाले स्थलों में से शिवजी की विशाल और नयनरम्य १०८ फूट ऊँची मूर्ति देखने हेतु पधारे थे। पास में ही प्रसिद्ध और प्राचीन 'गंगा' तालाब का जल लेकर प.पू. महाराजश्री ने समग्र हरिभक्तो के ऊपर छिटक कर भक्तों के जीवन को धन्य बना दिया था। उसी सरोवर के किनारे एक ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने जा रहे

थे। तब प.पू. महाराजश्री ने स्फाक्ष की उत्पत्ति तथा उसके माहात्म्य की सुदंर बात की थी। वहाँ पधारे तब मंदिर के पूजारीने प.पू. महाराजश्री का दर्शन करके बहुत ही भावविभोर होकर पू. महाराजश्री का स्फाक्ष की माला से पूजन किया था।

श्रीहरि के अपर स्वरूप प.पू. महाराजश्री जो संकल्प करे वही वस्तु सामने हाजर हो यही अपर स्वरूप का माहात्म्य है। पूजारीने भावविभोर बनकर ज्योतिर्लिंग का अभिषेक करवाया प.पू. महाराजश्री ने प्रार्थना की। प.पू. महाराजश्रीने ज्योतिर्लिंग का महाभिषेक वेदविधिपूर्वक षोडशोपचार से करके आरती उतारी। मंदिर के पूजारीने प.पू. माराजश्री के चरण स्पर्श करके धन्यता की अनुभूति की। वहाँ से प.पू. महाराजश्री और संतो के साथ प.भ. महेशभाई प.भ. के. के. पटेल के परिवार के घर पदार्पण किये। वहाँ से साम को संध्या-आरती तथा नित्य-नियम करके अपने उतारे पर पहुँचे। वहां थोडा समय विराम करके मोरेश्यस के समुद्र किनारे समुद्रस्नान करने पधारे थे। संत तथा हरिभक्तो के साथ समुद्र स्नान करके अलौकिक महादिव्य सुख प्राप्त किये थे। वहाँ पास में रहनेवाले प.भ. लालजीभाई पटेल के विशाल बंगले में पदार्पण क रके अपने संकल्प को परिपूर्ण किया। और वहाँ पू. महाराजश्रीके सानिध्य में संत-हरिभक्तोने दो घंटे तक नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन गाकर भजन भक्ति की थी।

ता. ६-११-०६ की प्रात: में ठाकुरजी की आरती के बाद प.पू. महाराजश्री के वरद् हाथों से कथा की पूर्णाहुति हुई। उसके बाद स्वामी नरायणस्वरूपदासजी ने वचनामृत की कथा के साथ श्री नरनारायणदेव तथा धर्मकुल की महिमा की कथा की। अंत में प.पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए अपनी बाल्यावस्था में यहाँ पधारे थे। यह स्मरण करते हुए सभी को आशीर्वाद दिया था। इसके बाद वहाँ के कई हरिभक्तों के घर पदार्पण किये थे। सभी भक्तों के आनंद का पार नहीं था। बाद में मोरेश्यस के हरिभक्तों से विदा लेकर संतो के साथ महाराजश्री सिसल्स के लिये प्रस्थान किये थे।

सिसल्स के इन्टरनेशनल एरपोर्ट पर अपने सत्संगियोने प.पू. महाराजश्री का भव्य स्वागत किया। हरिभक्तों के विशाल समूह के साथ प.पू. महाराजश्री अपने मंदिर में पधारे। वहाँ भी हरिभक्तों ने प.पू. महाराश्री का बेन्डपार्टी के साथ स्वागत किया। प.पू. महाराजश्री ने मंदिर में विराजमान श्री घनश्याम महाराज की आरती उतारी। सभी लोग दर्शन का अलौकिक सुख प्राप्त किये बाद में विशाल सभा का आयोजन किया गया। सभा में प.पू. महाराजश्री की आरती उतारी गयी। पूजन-अर्चन करके पुष्पहार इत्यादि द्वारा स्वागत किया गया। हरिभक्तों पर खूब प्रसन्न होकर हार्दिक आशीर्वाद दिये।

ता. ७-११-०६ के दिन प्रात: काल कथा का आयोजन किया गया। प.पू. आचार्य महाराजश्री ने व्यासपीठ की आरती उतारी उसकेबाद कथा प्रारम्भ हुई। वहाँ रहनेवाले हरिभक्तों के घर महाराज श्री पदार्पण किये। सभी के घर को तीर्थ बना दिये। हरिभक्तों के व्यापारी स्थलों पर भी पदार्पण किये। माहे नामक टापू पर रहनेवाले हरिभक्तों के व्यापार स्थल पर जाकर पदार्पण किये। अन्त में सायंकाल अपने मदिर में आकर घनश्याम महाराज की आरती उतार कर सभी को दर्शन का सुख दिये।

ता. ८-११-०६ के दिन प्रात: काल कथा-वार्ता में पधारकर पूज्य महाराजश्री ने दर्शन का सुख दिया। हरिभक्तों को सुखिया करने के लिये उनके निवास स्थान पर एवं व्यापारिक स्थल पर भी पदार्पण किये। वहाँ से पूज्य महाराजश्री शैल्वी टापू पर पदार्पण किये। वहाँ अपने हरिभक्तों ने पुष्पहार इत्यादि द्वारा पूज्य महाराजश्री का स्वागत किया। महाराजश्री ने उन्हें हार्दिक आशीर्वाद दिया। रासोत्सव में पधारकर जहाँ हरिभक्त आनन्द के गीत गारहे थे रास खेल रहे थे उनकी तन्मयता को देखकर महाराजश्री खूब प्रसन्न हुए। सभी भक्तों को आशीर्वाद दिये।

ता. ९-११-०६ के दिन प्रात: अपने मंदिर में आरती करके कथा की पूर्णाहुति किये। सभा में सभी भक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिये। यहाँ रहनेवाले सभी भक्तों के घर पदार्पण किये, घर को तीर्थ बनादिये। वहाँ से हरिभक्तों के विशेषाग्रह पर प्राले टापू आये। एरपोर्ट पर ही भव्यातिभव्य स्वागत किया गया। वहाँ के हरिभक्तों को दर्शन का सुख देकर दिव्य लाभ दिये। वहाँ से पूज्य महाराजश्री ग्रान्टास पधारे। वहाँ नूतन मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करके आरती पूजा करके सभा में पधारे थे। सभा में हरिभक्तों के प्रवचन बाद आचार्य महाराजश्री ने स्व श्री मुख से हार्दिक आशीर्वाद दिये। महाराजश्री की उपस्थिति में हरिभक्तों ने धुनि कीर्तन किया। भक्तों के भोजनादिक की व्यवस्था उत्तम की गयी थी।

ता. १०-११-०६ के दिन मंदिर की महापूजा में हरिभक्तों ने अलौकिक दिव्य दर्शन का सुख प्राप्त किया। वहाँ से सिसल्स में देखने योग्य स्थल पर गये। उसलाजिया समुद्र में स्नान करके हरिभाक्तों को प्रसन्न किये। वहाँ से महाराजश्री चार्टर प्लेन द्वारा लाडींग टापू पर आये। वहाँ भी हरिभक्तों ने महाराजश्री की पूजा-आरती की। वहाँ एलाइट विल्डर्स के स्टाफ क्वाटर्स की खात पूजा महाराजश्री ने अपने हाथों से की। वहाँ लाडीक टापू के हरिभक्तों के घरों में तथा व्यापारिक स्थलों पर पदार्पण किये। वहीं पर रिलेक्ष (लक्षरी) लोज का भी भूमिपूजन महाराजश्री के हाथों से सम्पन्न हुआ। सिसल्स के छोटे-बडे सभी टापुओं पर रहनेवाले भक्तों को प्रसन्न करके हार्दिक आशीर्वाद दिये। वहाँ के अपने अग्रगण्य

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १०

अनोखी टेक

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

भगवान सहजानंद स्वामी की तत्कालीन व्यूह रचना अनोखी थी। उस समय सुखद आनंद के प्रवर्तक श्री सहजानंद स्वामी की निष्काम सेवा का कर्मयोग सम्पूर्ण गुजरात में फैला हुआ था। आश्चर्यकी वात यह है कि उस समय विना साधन के सहजानन्द स्वामी अविश्रान्त गाँव-गाँव कच्छ-सौराष्ट्र संम्पूर्ण गुजरात में विचरण किये थे। कृपा के सागर भगवान स्वामिनारायण भक्तों के ऊपर जब कभी भी कोई दु:ख आता तो वहाँ पर पहुँच जाते थे। उनके दु:ख को दूर करते और आनंद प्रदान करते थे।

गाँव गाँव विचरण करके सदुपदेश द्वारा मदिरा, मांस, जूआ, लूंट, खून, आदि जैसी बातों को और घटनाओं को स्वाभाविक रूप से निर्मूल करते जा रहे थे। लोगों की भावनाओं को जीतते जा रहे थे। लोगो की श्रद्धा के लिए अधिक से अधिक पात्र होते जा रहे थे। और अनुयायियों की संख्या भी दिनप्रतिदिन विस्तृत होती जा रही थी।

यहाँ बात है एक असीम श्रद्धा की और पूर्ण विश्वास की, पूर्ण भक्ति की। अनुयायियों के दल में 'राजाभाई' नाम के एक अनन्य भक्त थे। श्री सहजानंद स्वामी और शिक्षापत्री के सभी आदेशो को उन्होंने जीवन में उतारा था। इतना ही नहीं, परंतु जो इनके संपर्क मेंआते उनमें भी राजाभाई नीति, दया, सत्य, पवित्रता, विवेक, क्षमा, भक्ति, वैराग्य आदि गुणों को भरते जाते और ज्ञान का कथन करते जाते।

इस किशान भक्त राजाभाई ने संसार से लगभग विमुख बनकर एकबार ऐसी प्रतिज्ञा ली की, "श्री सहजानंद स्वामी के मुखारविंद के दर्शन करने के बाद ही भोजन ग्रहण करूँगा" उस समय सौराष्ट्र के समुदाय की अव्यवस्था तथा मानवता के नाश को देखकर व्यथित हुए श्रीजी महाराज अविरत एक गाँव से दूसरे गाँव घूमते रहते।

उपर्युक्त 'प्रण' लेने के बाद राजाभाई के लिए महाराज का दर्शन करना आवश्यक था। महाराज का मुख देखने वे निकले परंतु जिस गाँव (जेतलपुर) में सहजानंद स्वामी का मुकाम था वहाँ से वे निकल चुके थे। बहुत जोरो की भूख लगी थी परंतु अगले गाँव पहुँचकर महाराज का दर्शन करने के बाद हीभोजन करूँगा ऐसा सोच कर वे वहाँ से चल दिये।

वहाँ से भी राजाभाई के जाने से पहले ही महाराज दूसरे गाँव चले गये।

इस तरह पूरे पंद्रह दिन दौडधाम में ही निक ल गये। भक्तराज को समझ में आ गया कि महाराज मेरी कठिन परीक्षा लेना चाहते हैं।

सोलहवें दिन उनका महाराज से मिलाप हुआ। उस समय महाराज एक गरीब विधवा बाई को आश्वासन दे रहे थे। राजाभाई वहाँ त्वरित पहुँच गये।

सहजानंद स्वामी को साष्टांग दंडवत प्रणाम किये। पंद्रह दिन के उपवास की बात की तब अंतर्यामी को भी असीम आनंद हुआ। महाराज ने मुस्कराते हुए कहा, "राजाभाई, कैसी 'प्रतिज्ञा'? प्रण को अंत तक निभाना आज के युग में कठिन है। आपकी प्रतिज्ञा तो वास्तव में अनोखी, अद्‌भुत और अद्वितीय है। आपने इस प्रतिज्ञा का पालन किया यह वास्तव में आनंद का विषय है।

उसके बाद राजाभाई ने महाराज के कहने से भोजन किया। भोजन करके महाराज के चरण पकड के बोले, "प्रभु! सदैव आप की सेवा का लाभ मिले इस कारण मुझे दीक्षा प्रदान कीजिए।"

सहजानंद स्वामी एक पल केलिए रुक कर दूसरे ही पल बोले "देखिएराजाभाई! दीक्षा लेकर भगवा वस्त्र धारणकरके आप को सेवा का कार्य तो करना ही है। वे सभी सेवा के कार्य, भगवा वस्त्र पहने बिना भी हो सकते हैं। यथार्थ दीक्षा, वीतराग संन्यस्त, यह सभी वृत्ति के आधीन है। परंतु प्रथम वृत्ति सेवा बने तो भगवान वस्त्रों के टीपटाप की भी कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए गीताकार द्वारा कथित 'वृत्तिका सन्यास' धारण कीजिए।

"महाराज! आज्ञा प्रदान कीजिए" "देखिए आप तो खेतीकाम में निपुण है। इस किसान विधवा बाई के पास जमीन तो है, परंतु उस जमीन को जोतने वाला कोई भी नहीं है। यह बाई बहुत दु:खी है, गरीब है, इसीलिएमेरी आज्ञा मानकर दीक्षा ग्रहण करने का विचार छोडकर इस बाई की जमीन जोत कर उसके घर पर ही आप आश्रय लीजिए। और उसमें भी मेरी एक शर्त है।"

"महाराज! आप कहेंगे वे सभी शर्त मुझे मान्य है।"

"जब तक आप जमीन जोत ते रहेंगे तब तक आप इस बाई पर उपकार कर रहे है।" ऐसी भावना अपने हृदयमें से संपूर्ण निकाल दीजिएगा। और उनसे आप कुछ भी प्राप्त होने की अपेक्षा मत रखना। और आप बाई के पास से भोजन के लिए केवल एक शेर आंटा जोखकर लेना और अपने हाथ से रोटी बनाकर खाना इस से विशेष कुछ भी नहीं स्वीकारना।"

महाराज की इस आज्ञा को मस्तक पर चढाकर मन से अपने आप को दीक्षित मानकर राजाभाई उस बाई के घर आये। और निष्ठापूर्वक निष्काम भाव से खेती का सभी कामकाज संभाल लिये। और महाराज का अहर्निश स्मरण करते-करते उनके आदेशानुसार खेत जोतने का कार्य

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १२

भक्तवर्मा श्रीहरि

- चंद्रकांत मोहनभाई पाठक (गांधीनगर)

रात्रि आगे बढ रही थी । गाँव की गलियाँ मौन हो रही थी । लोग अपने-अपने घरो में निद्राधीन हो गये थे । प्राणी मात्र दैनिक प्रवृत्तियों को पूर्ण करके विराम कर रहे थे । समग्र गढपुर गाँव के लोग शांति की गोद में विश्रांति कर रहे थे । तब अक्षर कक्ष में सुख शैया में विश्राम करते हुए श्रीहरि बैचेनी का अुभव कर रहे थे । निंद्रा नहीं आ रही थी । करवट बदलते हुए वे बैठ गये । पानी पीते । फिर सो जाते । फिर बैठ जाते ।

महाराज ! शरीर में कुछ तकलीफ है क्या ? आप अभीतक सोये नही । शुकमुनि और मूलजी ब्रह्मचारी पास में ही सो रहे थे । उस में से शुकमुनिने पूछा ।

नही शुकमुनि ऐसा कुछ भी नहीं है । परंतु नींद ही नहीं आ रही है ।

आप दोपहर के बाद से उदास मालुम हो रहे है । मन में कोई चिंता परेशान कर रही हो ऐसा मालूम होता है ।

शाम को भोजन भी ठीक से नही किये । मूलजी ब्रह्मचारी बैठ कर बोले शुकमुनि । आप सच कह रहे हैं । मेरा मन बहुत बैचेन है ।

महाप्रभु ! किस कारण आप बैचेनी का अनुभव कर रहे हो ?

शुकमुनि ! हम कोई धर्म की संप्रदाय की या उनके अगुवा की निंदा क्या कभी करते है ।

ना महाराज !

तो फिर दूसरे लोग हमारी निंदा क्यों करते है ? आप जानते है कि हम लोक में धर्म की स्थापना करते हैं । धर्म अर्थात् सत्य सत्य कभी छिपता नहीं है । सत्य अव्यय है । सत्य शास्वत है । भगवान बादरायण जिन धर्म के सिद्धान्तो को बनाया है उसे हम स्वीकार करते है । उसी का हम प्रतिपादन करते हैं । लोगों को धर्माभिमुख करते हैं ।

हे महाराज ! यह बात यहाँ किस तरह प्रस्तुत है ।

स्वामी ! बुरहानपुर में आज तक वर्षा नही हुई है । किसान परेशान हैं । बरसात नहीं होगा तो अन्न नहीं होगा । लोक जीवन की व्यवस्था विगड जायेगी । पशुपक्षी सभी परेशान हो जायेगे । इस से चिंतित राजा श्रृंगेरीपीठ के शंकराचार्य को बुलाकर कारण पूछा । शंकराचार्य ने क्या कहा खबर है ?

आपके राज्य में स्वामिनारायण के अनुयायी रहते हैं । वे सभी अनिष्ट के मूल है । स्वामिनारायण का वैदिक धर्म नहीं है । धर्म के नाम पर नया सिद्धान्त बनाया है । यह अपने सम्प्रदाय को बढाने का एक षड़यंत्र है । धर्म के विरुद्ध इन सभी का आचरण है । अधर्म से धर्मीपीडीत हो रहे है । धर्म पीडित होता है तो पृथ्वी दु:खी होती है । पृथ्वी दु:खी होती है तो इन्द्र कुपित होते है । इसीलिये बरसात नहीं होता है ।

गुस्देव ! क्या किया जाय कि वरसात हो ? राजा ने पूछा । जोमूलकारण है उसे दूर किया जाय । शंकराचार्यने कहा । सत्संगियो को बुलाइये और कहिये कि बरसात कराओ, अन्यथा कंठी तोड डालो । बरसात इनसे नहीं होगा, फिर ये लोग अपने आप कंठीतोड डालेंगे नहीं तोडे तो उन सभी को जेल में बन्द कर दीजिए । भले उनके भगवान यहाँ आवे ।

राजाने ऐसा ही किया । सत्संगियों को बुलाया । और कहा । तुम सभी धर्मको भ्रष्ट करने वाले स्वामिनारायण के शिष्य बने हो । जिससे मेरे राज् यमें बरसात नहीं हो रहा है । आठ दिनमें वरसाद कराओं यदि ऐसा नही होगा तो कंठी तोडनी पडेगी । मेरे राज्य में अधर्मी नहीं होना चाहिए । गुरुकी आज्ञा है ।

सत्संगियों ने कहा हे राजन् ! धर्म-भक्ति का तेज राजधर्म से उत्तम है । फिर भी बरसाद होना न होना हमारे हाथ में नहीं है । परंतु भगवान की कंठी का रक्षण हमारे हाथ में है । शरीर में जब तक प्राण है, तब तक, कंठमें कंठी तो रहेगी ही । धर्म के आधार को भ्रष्ट कहने वाले निर्मूल हो गये है यह बात आप नहीं जानते क्या ?

भ्रमित राजा गुस्से में कहा, सिपाहियों इन सभी को जेल में बन्द करदो । आठ दिन मे बरसात हो तभी इन्हें छोड़ना । बरसात नहीं हो तो इन सभी को आग से दाग कर राज्य के बाहर छोड देना । शुकमुनि ! मुझे यही बडी चिंता है । मेरे भक्त बिना खाये पीये जेल में बन्द है । हमें उन्हें बाहर लाना है । श्रीहरि घूमते-घूमते कहे कि, भक्तों को धैर्य हेतु एक पत्र क्यो न लिखा जाय ।

हाँ महाराज ! इस समय आप शांति से सोजाइये प्रात: जैसा आप कहेंगे वैसा पत्र हम लिखेंगे, ऐसा शुकमुनिने कहा ।

नहीं स्वामी ! पत्र अभी लिखना है । तभी मुझे शांति होगी । शुकमुनि दीपक जलाये । कागज-पेन लाये और लिखने लगे, इतने में हवा के झोंके से दीप बुझ गया । मुनिने कहा महाराज ! बाकी पत्र प्रात: लिखेंगे । पुन: महाराजने कहा पत्र पूरा करके सोना है । आपको प्रकाश चाहिये न ? मैं प्रकाश करता हूँ । महाराजने अपने पैर को नीचे लटकाया, पैर के तलुये से प्रकाश फैल गया । महाराज बोलते गये शुकमुनि लिखते गये । धैर्य के बहुत सारे उदाहरण लिखवाये अंत में लिखवाये कि हे भक्तजन ! आप लोग कोई चिंता मत करना । आज के तीसरे दिन समग्र देश में वरसात होगा । आठ दिन तक वरसात चालू रहेगा । पत्र पूर्ण करके पता लिखवाया । अब यह पत्र बुरहानपुर पहुंचाना है । अभी किसी को तैयार करो ।

अभी तो मध्यरात्री है महाराज !

इसकी कोई चिंता नही कौन जायेगा ।

माणावदर से गोविंद भट्ट आये है । ये बहुत तीव्रगति से चलते है । इन्हें भेंज दे ।

मुकुन्दब्रह्मचारी ने कहा रतनजी बापू गोविन्द भट्ट को बुला लाइये ।

भट्टजी यह पत्र लेकर आप बुराहनपुर जाइये । वहाँ बरसात बरसाकर आना । श्रीहरिने कहा ।

हाँ महाराज जायेंगे । यह पत्र लीजिये और अभी निकल जाइये । सकिये महाराजे कपडा पहनकर, आता हूँ । तैयार होकर आये, महाराज को दंवडत प्रणाम किये । और पत्र लेकर चल दिये । महाराजने कहा भट्टजी ! कही सकियेगा नही पत्र देकर तुरंत ही वापस आइयेगा ।

भट्टजी चल दिये । घेला नदी के किनारे पहुंचे तो विचार किये की अभी तो मध्यरात्रि है, अन्धकार है । सोमनाथ दादा के चबूतरे पर थोडीनींद लेलूं जब चार बजेगा तो चल देंगे । ऐसा ही किये जब उठे तो वे बुरहानपुर में अपने को पाये । किसी से पूछे कि भाई यह कौन सा गाँव है तब उसने बताया यह बुरहानपुर है । आप तापी नदी के किनारे बैठे है । तीर्थ यात्री लगते है । हाँ भाई प्रवासी हूँ आप जेल का रास्ता बतायेगे क्या ? यहाँ स्वामिनारायण के भक्तों को जेल में बन्द किया गया है उन्हें मिलना है ।

वहाँ आप जायेंगे तो आपको भी जेल में बन्द कर दिया जायेगा । ऐसा कहकर वह राही चल दिया ।

जेल के सिपाही ने पूछा आप कौन है ? कहाँ से आये हैं ? भट्टजीने विनयपूर्वक कहा मैं सौराष्ट्र से आया हूँ । आपके जेल में स्वामिनारायण के भक्त बन्द है उन्हीं से मिलना है । महाराज ने सिपाही के हृदय में दया उत्पन्न किया जिससे वे जेल में जाने दिये ।

सत्संगी भगवान की धुनि कर रहे थे । भट्टजी वहाँ पहुँचकर सभी को जय स्वामिनारायण बोले । सभी से कहे कि मुझे स्वामिनारायण भगवान ने भेंजा है, यह पत्र आपके लिये है, चिंता करने की कोई बात नहीं है । दो दिन में बरसात होगी । मुझे जल्दी वापस जाना है । संध्या-पूजा बाकी है । इसलिये जा रहा हूँ ।

भट्टजी तापी नदी के किनारे जाकर स्नान के लिये ज्यों डुबकी लगाये कि घेला नदी के किनारे निकले, यह सभी लीला भगवान स्वामिनारायणने की थी । भक्तों के आधीन रहने वाले भगवान क्या नहींकर सकते है ।

पत्र प्राप्त करके प्रसन्न भक्त सिपाहियों द्वारा राजा के पास समाचार भेंजे कि हमारे भगवान स्वामिनारायण का पत्र आया है कि तीन दिन में बरसात होगा । लेकिन राजा ने विश्वास नहीं किया । उसने कहा कि बरसात होने पर सच माना जायेगा । तभी हम सभी को छोंड़ेगे । तीसरे दिन खुब बरसात हुआ । यह देखकर राजा प्रसन्न हुआ और सत्संगियों को छोड दिया । महाराज के वचनानुसार आठ दिन तक बरसात हुआ । तापी में बाढ आगयी । शंकराचार्य के मठ में पानी घुस गया । सत्य तो सत्य ही होता है, उसे प्रकाश की जरूरत नहीं होती । सत्य स्वयं एक प्रकाश है ।

श्रीजी महाराज संतो के साथ अक्षर दालानमें बैठे थे गोविन्द भट्ट को आते देखकर मुस्कराने लगे । भट्टजी दंडवत् प्रणाम कर रहे थे उस समय महाराजने कहा भट्टजी ! आप तापी में भी नहाये और उन्मत गंगा में भी नहाये । सरल हृदय से गोविन्द भट्टने बुरहान पुर के सम्पूर्ण यात्रा की कहानी कह सुनाई ।

संत हरिभक्त सभी इस असाधारण प्रसंग को सुनकर खूब प्रसन्न हो गये ।

पृष्ठ ७ से आगे.....

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की मोरेश्यस-सिसल्य धर्मयात्रा

हरिभक्तों श्री हरेशभाई, श्री प्रविणभाई, श्री महेशभाई, श्री के. के. पटेल तथा सीसल्स एवं मोरेश्यस के अग्रगण्य हरिभक्तों ने इस धर्मप्रवास में साथ रहकर प.पू. महाराजश्री की सेवा की । विशेष रूप से वहाँ के लीवी नामक फोटो ग्राफर जो सतत पांच दिन तक पूज्यमहाराजश्री के साथ प्रवास में रहकर बहुत सारी तस्वीरें खींचकर अपने को भाग्यशाली मानने लगा था । अंत में जब पूज्य महाराजश्री अहमदाबाद पधार रहे थे उस समय एक सभा का आयोजन किया गया था । उस सभा में फोटोग्राफरने पूज्य महाराजश्री के साथ का जो उसने अनुभव किया उसे व्यक्त करते हुए कहा कि मेरी बडी भाग्य यह की आज की रात्रि में भगवान स्वामिनारायण का दर्शन हुआ है । इसप्रकार कहकर पूज्य महाराजश्री के चरणों में गिर पडा । यथार्थ तो यह है कि जो सत्संगी नहीं था उसे भी ऐसा दिव्य अनुभव हुआ । यही दिव्य यात्रा की फलश्रुति है । मोरेश्यस के उपप्रधान मंत्री को जब यह पता चला कि स्वाममिनारायण संप्रदाय के आचार्यश्री पदार्पण कर रहे है तो उसके मन में भी भावना हुई कि हमारे घर पदार्पण करे, उसने पार्थना किया और महाराजश्री उसकी प्रार्थना सुनकर उनके घर पदार्पण किये । वहाँ वह उपप्रधान मंत्री अपने परिवार के साथ पूज्य महाराजश्री की पूजा विधि करके आरती की और दिव्य आनन्द का अनुभव किया । पू. महाराजश्री का दर्शन करके भाव विभोर होकर कहने लगा कि आप भगवान के ७ वें वंशज इश धरती पर भक्तजन का कल्याण करने के लिये फिर रहे हैं यह जीव मात्र की अहोभाग्य है । इस प्रकार अनेकों प्रकार की वातें करके पू. महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त करके वह उप वडाप्रधान धन्यता का अनुभव किया।

सभी कार्यक्रम पूर्ण करके, हरिभक्तों को आनन्दित करके चार्टर प्लेन द्वारा सिसल्स से मोरेश्यस होते हुए ता. १२-११-०६ के दिन स्वदेश अहमदाबाद पहुंच गये ।

श्री घनश्याम महाराज का

रजत-द्विशताब्दी जन्म जयंती महोत्सव

"जन्मभूमि में जन्मजयंती"

- ब्र. पवित्रानंदजी तथा ब्र. अविनासानंदजी (छपैया)

परब्रह्म परमात्मा इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण का २२५ वां प्राकट्य महोत्सव जन्मजयंती को अद्वितीय ढंग से मनाने के लिये तथा प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के संकल्प को पूर्ण करने के लिये प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री घनश्याम महाराज के प्रागट्य की जन्मभूमि छपैया धाम में संवत् २०६३ ता. २५-२६-२७ अक्टूबर २००६ को धूम धामसे जन्मोत्सव मनाया गया। जिसका आनंद लेने केलिये देश के प्रत्येक गाँवो से भक्त उमड़े पड़े थे। इसमें आनंद देनेके लिये प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे हुए थे, जिसके मार्गदर्शन में नाना प्रकार के उत्सव सम्पन्न हुए थे, इस जन्मभूमि के उत्सव में तथा जन्म जयंती के उत्सव का पूर्णानन्द लेने हेतु मानव मेदिनी भरी हुई थी। जहाँ पर स्वयं परमात्मा बाल स्वरूप श्री घनश्याम महाराज विराजमान हों वहाँ कम भाग्यशाली को दर्शन का लाभ नहीं मिलता है। जो भाग्यशाली थे जिन्होंने जीवन भर तप किया था उन्हे इस उत्सव का लाभ मिला। यह रजत द्विशताब्दी महोत्सव प्रारम्भ हो इससे पहले ही १९ ता. को इतना तूफान आया कि सारे मंडप इत्यादि को उखाड फेंका। लोगो को होने लगा कि यह कार्य अब कठिन होजायेगा, लेकिन भक्तोने दो घंटे की धून प्रारम्भ की और देखते देखते वातावरण एक दम शांत हो गया। छपैया में सेवा करने वाले तपोवृद्ध वयोवृद्ध ब्रह्मचारी गवैया स्वामी रामकृष्णानंदजी के सानिध्यमें छपैया मंदिर के महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानन्दजी की देखरेख में सेवा करने वाले श्री प्रवीणभाई नसीत तथा आयोजन में विशेष सहयोग करने वाले श्री उदयनभाई महाराज की सेवा से जन्मस्थान को विशिष्ट प्रकार से अलंकृत किया गया था। नारायण सरोवर के जल को शुद्ध किया गया और घाट को रंग से रंगा गया। नारायण सरोवर के किनारे कथा मंडप बनाया गया। मंदिर को उत्तरप्रदेश के नियमानुसार घास तथा अन्य हरियाली से अलंकृत किया गया था। अखंड धुनि, भागवत कथा का आयोजन किया गया था। कथा मंडप को नाना प्रकार के बन्दनवार एवं दरवाजों से सुशोभित किया गया था। रंगबिरंगी-कृत्रिम फूलो से महोत्सव का वातावरण सुहाना हो गया था। धर्म भक्ति भवन, व्रजेन्द्रभवन, रामप्रताप भवन, इच्छाराम भवन, अयोध्याप्रसाद भवन में हरिभक्तों की निवासीय व्यवस्था की गयी थी। इतनी सुन्दर व्यवस्था थी जैसे घर की व्यवस्था हो। सुन्दर सुविधा करने के लिए श्री नरनाराणदेव स्कीम कमेटी के निष्कामी सेवा भावी भक्त श्री दशरथभाई पटेल, श्री रतीभाई पटेल, श्री जी. के. पटेल, श्री रमणभाई पटेल, श्री अमृतभाई चौधरी इत्यादि भक्तोंने अन्तरंग व्यवहार समझकर व्यवस्था में लगे रहे। जिससे भक्तोंने सुविधा से असुविधा का अनुभव नहीं किया। भक्तिमाता भोजनालय एवं प्रेमवती भोजनालय द्वारा समस्त अभ्यागतो को महंत के.पी. स्वामी नारायण स्वामी (प्रयाग) नारायण स्वामी (सायला) इत्यादि संतो ने बड़ी श्रद्धा के साथ भोजन करवाया। यज्ञ मंडप में यज्ञविधि एवं पूजा विधि नारायणपुरा महंत प्रेमस्वरूप स्वामी ने सम्हाली थी। बालचरित्र कथा के वक्ता पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) ने अमृतमयी वाणी में कथा का रसपान कराया।

२५ अक्टूम्बर २००६ को महाविष्णुयाग प्रारम्भ हुआ। श्रीहरि के लीलाचरित्रो की प्रदर्शनी लगाई गयी थी, जिसका दर्शन करके भक्तजन आनन्दित हो रहे थे। अखंडधुनि भागवत कथा तथा घनश्याम बालचरित्र की कथा का आरम्भ अयोध्या की छोटी छावनी के महंत श्री नित्यगोपालदासजी के हाथों किया गया था। छपैया के प्रसादी स्थलों का भक्तोंने परिक्रमा किया। यह परिक्रमा कीर्तन धुन के साथ पूर्ण हुई। रात्रि में कवि सम्मेलन रखा गया था।

२६ अक्टूबर को प्रातः काल सामूहिक महापूजा कथा पारायण, एवं मध्याह्न में श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री जब पधारे तो भक्तोंमें नवचेतना जगउठी थी। उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध दैनिक समाचार पत्रोंने मुख्यरूप से इस समाचार को छापा था, जिसके परिणाम स्वरूप गोंडा जिला एवं वस्ती जिला के श्रद्धालु जनता की संख्या बढने लगी थी। घनश्याम महाराज में इतना प्रेम उत्तरप्रदेश की जनता में हो गया था कि बार-बार लौटकर दर्शन कर रही थी। उन्हें छपैया छोड़ने का मन ही नहीं हो रहा था। रात्रि में १० बजे जन्मोत्सव प्रसंग पर २२५ कि. का केक मंडप में रखा गया। ब्राह्मणों ने वैदिक मंत्र का पठन किया। बाल स्वरूप घनश्याम महाराज का षोडशोपचार पूजन किया गया था। समूह

में सात हजार दीपक से महा आरती करके प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने २२५ किलो की केक काटकर हेप्पी बर्थडे टू यू घनश्याम महाराज तथा धर्म घर आनंद भयो का कीर्तन किया। ब्राह्मणों ने प्रसाद वितरण किया। यह दृश्य मानो धर्मदेव के समकालीन स्थिति का दर्शन कराया हो। जन्मोत्सव को जिस तरह मनाया गया वह भूतो न भविष्यति की स्थिति का था। जिसे वाणी से वर्णन नहीं किया जा सकता है।

२७ अक्टूबर को सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज के बाल चरित्र की पूर्णाहुति, दाताओं का सन्मान, कथा की पूर्णाहुति, प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन, गुरुमंत्र, दीक्षाविधि, प.पू. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद, इत्यादि कार्यक्रम धूमधाम से सम्पन्न हुआ। श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सेवाका कार्यभार सुन्दर ढंग से सम्हाला था। सभा के संचालक शा. हरिस्वरूपानंदजी थे। मथुरा मंदिर के महंत अखिलेस्वरदासजी विविध सेवा में भाग लिये थे।

जिस चरणरज की चाहना ब्रह्मादिक देव करते हैं उस भूमि का आनन्द लेकर भक्तजन जीवन कृतार्थ किये। दीपावली के पवित्र पर्व पर घर रहने का मन सभी को होता है। लेकिन भक्तों के मन में तो प्रभु का घर ही हमारा घर है। ऐसा मानकर आनंदित हो रहे थे। महोत्सव के मुख्य यजमान श्री नारायणभाई जादवा खेताणी परिवार सुखपर (कच्छ) के सुपुत्र श्री लालजीभाई, श्री शामजीभाई (लंडन) थे।

पारायण के मुख्य यजमान श्री रमेशभाई रणछोडभाई, मारफतिया परिवार (यु.एस.ए.) थे। विविध कार्यक्रमों के मुख्य यजमान एवं सह यजमान तथा दाता, उपदाताओं ने तन, मन, धन से सेवा का कार्य किया। इन सभी भक्तों के ऊपर परम पिता परमेश्वर घनश्याम महाराज एवं आचार्य महाराजश्री का अमित स्नेह एवं आशीर्वाद प्राप्त होता रहे, ऐसी महा प्रभु के चरणों में प्रार्थना।

आदेश

इसीलिए स्वामिनारायण संप्रदाय के अनुयायियों को सूचित किया जाता है कि प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कोलोनीया (एडिसन) मंदिर में कथा-वार्ता के लिए भेजे गये साधु ईश्वरजीवनदास गुरुशा. पुरुषोत्तमप्रकाशदास स्वामी मनस्वीस्व से उस स्थान को छोडकर लापता हो गये है। उन्हे अपने संप्रदाय में से बहिष्कृत धोशित किया गया है। इस प्रसंग की पुलिस में फरियाद-इमिग्रेशन फरियाद आदि कार्यवाही हुई है। इसीलिए उन्हें आश्रय नहीं दिया जाय।

आज्ञा से
महंत स्वामी शा. निर्गुणदासी स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद।

पृष्ठ ८ से आगे.....

अनोखी टेक

करने लगे।

बाई सूखी रोटी के बदले रोटी पर घी या मरचा का अचार लगाकर देती तो राजाभाई नतमस्तक होकर मना करतें। और नम्रतापूर्वक कहते कि, "सहजानंद स्वामी की आज्ञा मात्र एक शेर आंटा लेने की ही है। इसीलिए आपकी तरफ से दूसरा कुछ स्वीकार्य करके मैं गुरुद्रोही नहीं बनना चाहता हूँ।

संक्षिप्त में इतना ही तात्पर्य है कि परिश्रम ही पारसमणी है। परिश्रम से ही प्रभुता का जन्म होता है। परिश्रम स्वयं ही पुरस्कार स्वरूप (परमानंद स्वरूप) है। परिश्रम द्वारा ही यथार्थ प्रसन्नता का आनंद मिलता है। परोपकार की प्रवृत्ति जितने श्वास खर्च करेंगे उनता ही जीवन व्यापार की वास्तविक कमाई प्राप्त होगी। परोपकार करने में "पर" ऊपर उपकार करने का मतलब नहीं होता, परंतु उससे अपने ही आत्मा की उन्नति होती है। इसीलिए परोपकार वास्तव में तो अपने पर किया गया उपकार ही है। परोपकार से परमार्थ तक जीवन को ले जाया जाता है। परमार्थ हेतु कि गई प्रवृत्ति जीवनमुक्ति के लिए श्रेष्ठ प्रवृत्ति है। ऐसे अनन्य हरिभक्त राजाभाई को कोटि कोटि प्रणाम।

श्रद्धांजलि मातुश्री को (छंद-शार्दुविक्रीडित)

आ संसार त्यजी जवुं हरि कने निर्माण ऐ शाश्वत,
युगोथी न टकी शक्यु जन थकी, जातस्य मृत्यु ध्रुव.
धन्तेरस्य दिने बकी शुभ पले धामे सिधाव्यां तमो,
मातुश्री परिवार ने परहरि अक्षरनिवासी बन्या.

हर्षोल्लास भरीअनेक उजवी दीपोत्सवी मा सदा,
संसारी सुख माणियां कमलवत्, जोवा मल्यां दुःखनो,
भाग्यश्री, धनलक्ष्मीशां जननीओ ! आनंदमूर्ति समां,
पाम्यां श्रीहरि की कृपा, स्वजननां सन्मान पाम्यां घणां.

जेणे धर्मधुरंधर अवतर्या माता सुपूज्या अहा,
शिक्षापत्री पढावी बालवयमां संस्कार सिंच्या महा.
जेणे जीवन धर्म-निष्ठ बनीने विताव्युं सत्संगमां,
ते माना ऋण मुक्त आ जीवनमां थावुं कदि शक्य ना.

श्री नरनारायणदेवने विनवुं हुं साष्टांग पाये पडी,
ए आत्मा चिर शांति प्राप्त करजो, वैकुंठमां वास हो.

-विजयकुमार पुरोहित
(डायरेक्टर, टर्फ हाईस्कुल)

अन्य संप्रदायेषु स्वामिनारायण संप्रदायस्य वैदिकत्वं भगवतः स्वामिनारायणस्य भगवत्ताच ॥

- डॉ. वाचस्पति मिश्र प्राचार्य (श्री स्वा.सं.म.वि. जेतलपुर-अहमदाबाद)

सर्वेषांसप्रदायानाम्नामोल्लेख पुरस्सरं श्री स्वामिनारायण सम्प्रदायस्य वैदिकत्वं, साम्प्रयादिकपरम्परा, आस्तिकवादाः, साम्प्रदायिकशास्त्रेषुश्रुत्यविरोधकत्व मनुयायिनः कीदृशः दार्ढ्येन विश्वाशः सम्प्रदायेऽस्मिन् कुर्वन्ति एतत्सर्वं सर्वतोभावेन नहि अपितु संक्षेपेण याथातथ्येन विमृश्ये -

वेदं वेत्ति अधीते वा घ प्रत्यये कृते - वेदेषु विहितं कर्मइति विग्रहे उक्त प्रत्यये कृते आदिवृद्धौ कृतायाम् ठस्येकादेशे वैदिक शब्दस्य निष्पत्तिः जायते अर्थात् वेदेषु व्युत्पन्न वेद समस्यो वा वेदविषयको वा - वेद विहितानुष्ठानेन पूतम् यत् तत् वैदिकम् । वेदे भवं वैदिकम् इति कथनेन किमितिप्रश्नः उत्पद्यते - तत्र भारतीय सन्दर्भे संस्कृतिधर्मयोः सर्वस्वं मन्त्र ब्राह्मणात्मकवेदः प्राचीनतमः ग्रन्थः अस्ति । आर्य, धर्म, ज्ञान विज्ञान, राजनीति, राष्ट्रनीति, अन्तर राष्ट्रनीति, इत्यादीनां विविधनीतिनियमानामाकरो वेदः । वेदस्त्वपौरुषेयः पारावारइव अगाधः, अगाधत्वादेवास्यवेदनामान्वर्थ संज्ञा सार्थकतां याति । तथापि व्याख्यानेनापौरुषेयस्यवेदस्य सामार्थवृक् यज्चित्यादयः नामानि सङ्कलितानि । तथाप्यद्यतने ध्यान धारणा समाध्यभावात् स्वल्पवयः कारणाच्च उपनिषदः निर्मिताः । तत्राप्यपूर्तिः लौकिकाना कृते तदनु पुराणानां रचना सञ्जाता । यद्वेदेतत्सर्वस्वन्तदनूपकारकेषु प्रतिष्ठित तमिति ।

नानाविधसम्प्रदायपरम्परायामास्तिकनास्तिकवादाः दृश्यन्ते, तत्र कुत्र वैदिकत्वं कुत्रावैदिकत्वमितिप्रथमः प्रश्नः । यत्र वेद विहितानुष्ठानं तत्रैवास्तिकवादाः तत्रैव वैदिकत्वञ्च । यथा च शाक्ताः गाणपत्याः स्कान्दाः वैष्णवादयः स्वस्वमतानुसारं स्वेष्ट देवं प्रपूजयन्ति, तत्रसेश्वरवादेच वैदिकत्वंप्रमाणयन्ति तदेव साधु । अवतारवादस्यापि वैकल्पिकं रहस्यमुद्भावयन्ति यथा श्रुतयः प्रमाणयन्ति यत् - यतो वा इमानि भूतानि जातानि येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व तद्ब्रह्म । तदैक्षतवहुस्यां प्राजायेयेति तत्तेजोऽसृंजत् । हिन्दू सम्प्रदाये आस्तिकवादे, अवतारवादे सेश्वरवादे च वैदिकत्वे प्रमाणम् - ईश्वरस्तु विभुचेतनः स ईश्वरः "सत्वादयो न सन्तीशे यत्र तु प्रकृताः गुणाः" इति वचन प्रामाण्यात् हेय प्राकृतगुण रहितः "परास्यशक्तिर्विविधैव श्रूयते स्वाभाविकी ज्ञानवलक्रियाच" इत्यादि श्रुतिप्रामाण्यात् निस्माधिकानन्त कल्याणगुण विशिष्टः आनन्दंब्रह्म, सत्यं ज्ञानमन्तं ब्रह्मइत्यादि श्रुतेः सच्चिदानंद स्मः देशकालवस्तु परिच्छेदशून्यात्मकानन्तत्वविशिष्टत्वादनन्तः ब्रह्माशब्दवाच्यः, सदेव सौम्ये दमग्रासीत्, एकमेवाद्वितीयम्, यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते इत्यादि श्रुतेरस्य जगतः अभिन्ननिमितोपादनकारणस्मः भुक्ति मुक्ति प्रदश्च तदेवब्रह्म ।

समग्रहिन्दूसम्प्रदायेषु तत्तदाधारी भूतानां स्वेष्टदेवपराणामानुयायिकानाम्विषये भवत्येतादृशी भावभूता वैदिकी परम्परा । अवतारवादे ईश्वरस्तु यथाकालं लोक रञ्जनाय जगत्कल्याणाप स्मीभवति। श्रुतयः प्रमाणयन्ति - सर्वे वेदाः यत्पदमामनन्ति तमेतंविदित्वातिमृत्युमेति नान्यः पन्थाविद्यतेऽनाय । भगवता कृष्णेनापि गीतायामुक्तम्

यदा यदाहिधर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

भागवत् वचनम् यथा - कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् । भगवता स्वामिनारायणेनाप्युक्तम् - "सकृष्णः परब्रह्म" इत्याद्युक्तम् ।

सम्प्रदायस्याचारविचारेण साम्प्रदायिक रहस्यात्मक शास्त्रेणसहविरोधे विद्वत्संतोषावहं सुसङ्गतिंकुर्वन्ति - इत्यस्मिन् विषये विचार्यते -

सम्प्रदायस्याचारविचारेण साम्प्रदायिकरहस्यात्मक शास्त्रेण यत्र कुत्रापि विरोधः भावितुन्नार्हति यः कोऽपि सम्प्रदायः मनः कल्पितः स्यात् तत्रश्रुतिविरोधः एव, अद्यतने धर्मप्रायभारते देशे नानाविधाः सम्प्रदायाः कल्पिताः दृश्यन्ते - तत्र तत्र सम्प्रदाये स्वेच्छया ते आचारविचाराः कुर्वन्ति । स्वसम्प्रदाय प्रपुष्टये पण्डितानां साहाय्येन रहस्यात्मकशास्त्रं निर्माय्य श्रुतिविरोधेऽपि श्रुति

मार्गगाः भवन्ति । बाहुमानेनचोदिता विद्वान्सः तदनुयायिनः भवन्ति । ''स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः'' इति वचनात् - ते भौतिकवादे स्वयमेव स्वस्मिन् ईश्वरत्वं प्रतिपादयन्ति । यत् किमपि चमत्कारं प्रदर्श्य जनाननुयायिनः कुर्वन्ति एकं विशिष्टं स्थानं समाजे प्रतिष्ठाप्य सम्प्रदाय रचनां कुर्वन्ति - अतः एतादृशां पाखण्डकल्पितानां साम्प्रदायिकानां कल्पितंशास्त्रविभवानां श्रुतिविरोध एव अतः विद्वत्संतोषावहां सुसंगति कथं भविष्यतीति ।

स्वंसम्प्रदाय माहात्म्यं प्रवर्द्धयन् -
भगवता स्वामिनारायणेनोक्तम् यत्
कृष्ण कृष्णावताराणां खण्डनं यत्र युक्तिभिः ।
कृतं स्यात्तानि शास्त्राणि न मान्यानि कदाचन ॥

कौर्भ्ये - येषां न कारणं वेदा न विप्रा न जनार्दनः ।
तन्त्राणि धर्मशास्त्राणि तेषां वाक्यं विवर्जयेत् ॥
विज्ञानेश्वरेण - असत्छास्त्रं चार्वाकादीनाम् ॥ ''यदि पाखण्ड कल्पितमितिशिक्षापत्री वचनात् पाखण्ड कल्पितं यच्छास्त्रंसंप्रदायश्च कदाचिदपि न मान्यः । सम्प्रदायस्याचार विषये - आचारः प्रथमोधर्मः इति श्रुति चोदितेन स्वामिनारायण सम्प्रदायस्याचार विचार परम्परा सर्वेषु सम्प्रदायेषु मुख्यत्वेन वरीवर्ति दृश्यतेः - यथा नीति नियमाः निगदिताः ते साकल्येनात्रोपलभ्यन्ते । वेदोपकारकत्वात् शास्त्राण्यपि तथैव स्वीकृतानि सन्ति स्वयमेव भगवता श्री स्वामिनारायणेनास्तिकवादं पौष्ट्यन् मङ्गलाचरणमाचरितम् - वामें यस्य स्थिता राधा श्रीश्च यस्यास्ति वक्षसि । वृन्दावन विहारं तं श्रीकृष्णं हृदि चिन्तये ॥ मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि च शास्त्राणि प्रथन्ते वीरपुस्मकाणि भवन्ति आयुष्मत्पुस्मकाणि च'' स्वेष्ट देवता नमस्कार स्मं मङ्गलाचरणमाचरितम् शिष्टाचारानुमितित्वात् । एतादृशेन शास्त्रेण सम्प्रदायस्य वैदिकत्वमास्तिकत्वञ्च प्रतिपादितं भवति । तत्रैवनिर्दिष्टम्-

स्व वर्णाश्रम धर्मो यः स हातव्योन केनचित् ।
परधर्मो न चाचर्यो यदि पाखण्ड कल्पितः ॥

वर्ण - ब्राह्मण, क्षैत्रिय, वैश्य, शूद्र,

आश्रम - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास, इत्यादिषु विषयेषु स्पष्ट स्वेण भगवतोक्तम् यत् वर्णाश्रम धर्ममर्यादायाः कदापि परित्यागो न कर्तव्यः ।

उपासनाविषये:

विष्णो शिवोगणपतिः पार्वतीच दिवाकरः ।
दृष्ट्वाशिवालयादीनिदेवागाराणि वर्त्मनि ।
प्रणम्य तानि सतद्देव दर्शनं कार्यमादरात् ॥

स्वसाम्प्रदायिकाचारविचाराणाँ विषये उक्तम् -

शास्त्रोक्त आपद्धर्मो यः सत्वल्पापदिकर्हिचित् ।
मदाश्रितैर्मुख्यतया ग्रहीतव्यो न मानवैः ॥

शास्त्र विधि मनुसृत्यैव विधिः कार्या अशास्त्रविधिं परिहार्येति ।

''कृष्ण एव पर ब्रह्म भगवान् पुरुषोत्तमे'' त्युद्घुषितं तत्रैव, स्वयमेव भगवान श्री स्वामिनारायणः षडैश्वर्य सम्पन्नः सर्वथा सर्वदा च कृष्णस्य सर्वज्ञत्वं प्रतिपादितवान् ।

अतः अस्य भगवतः श्री स्वामिनारायणस्य प्रतिष्ठापित सम्प्रदायाचारविचारपरम्परारहस्यात्मकशास्त्रेण श्रुतिविरोधः भवितुन्नार्हति - शिक्षापत्री माध्यमेन आश्रितानुद्बोधयन्त्यः कतिपयश्रुतयः वैशिष्ट्यं प्रमाणयन्ति -

शारीरकाणां भगवदगीतायाश्चावगम्यताम् ।
रामानुजाचार्यकृतंभाष्यमाध्यात्मिकं मम ॥
मन्तव्यानि प्रमाणानि तान्येतर वाक्यतः ।
धर्मेण सहिता कृष्ण भक्तिः कार्येति तद्रहः ॥
धर्मोज्ञेयः सदाचारः श्रुति स्मृत्युपपादितः ।
माहात्म्यज्ञान युग्भूरिस्नेहो भक्तिश्च माधवे ॥
वैराग्यं ज्ञेयमप्रीतिः श्रीकृष्णेतर वस्तुषु ।
ज्ञानं च जीवमायेश स्याणां सुष्ठुवेदनम् ॥
स राधया युतो ज्ञेयो राधाकृष्ण इति प्रभुः ।
सक्मिण्या रमयोपेतो लक्ष्मीनारायणः सहि ॥
ज्ञेयोऽर्जुनेन युक्तोऽसौ नरनारायणाभिधः ।
वलभद्रादियोगेन तत्तन्नामोच्यते सच ॥
अतश्चास्य स्वस्मेषु भेदो ज्ञेयो न सर्वथा ।
चतुरादि भुजत्वं तु द्विवाहोस्तस्य चैच्छिकम् ॥
हृत्स्थोऽणु सूक्ष्मश्चिद्रूपो ज्ञाता व्याप्याखिलांतनुम् ।
ज्ञानशक्त्या स्थितोजीवो ज्ञेयोऽच्छेद्यादिलक्षणैः ॥

इत्थं स्वामिनारायण सम्प्रदायस्याचारविचार परम्परैव न अपितु सत्शास्त्रमपि रहस्योद्भावने पारयितुं समर्थम् । अतः श्रुतिविरोधे लेशावहः संदेहो न । एतदर्थमेव मम मते एषः सम्प्रदायः अन्यसम्प्रदायात्भिन्नः । श्रुति स्मृति प्रतिपादिता व्यवस्था प्रतिष्ठापिता । येन विद्वद्भ्यः सन्तोषावहां सुसंगतिं करोति ।

साम्प्रदायिकानामनुयायिनः दृढतया सम्पूर्णतया च वेदेषु विश्वसन्ति - इति प्रश्ने - उत्तरयति ।

सर्वेषां भारतीयार्य मर्यादाप्रस्थापकानां सम्प्रदाय परम्परायां मम सम्प्रदायः स्वामिनारायण सम्प्रदायः

अयमपि सम्प्रदायः तथैव जगति प्रतिष्ठान्वितः वर्तते यथा - अद्वैत - द्वैत द्वैताद्वैत - विशिष्टाद्वैत - शुद्धद्वैतादयः वर्तन्ते । तत्र विशिष्टाद्वैत मतस्यानुषङ्गिकंरहस्यं सर्वतो भावेनोपास्योपासकानामाचार्यपरम्परा यामनुयायिनाम्मनसि दृश्यते ।

भगवता श्री स्वामिनारायणेनोक्तं शिक्षापत्र्याम् - मतं विशिष्टाद्वैतं मे गोलोकोधाम चेप्सितम्'' अस्य भगवतः मतं विशिष्टाद्वैत मतं वर्तते, अस्यानुयायिनः साम्प्रदायिकाः सम्प्रदाय पुष्टचर्थं, ब्रह्मतत्व पुष्टचर्थं वा नाना विध शास्त्राणि रचितानि तत्र -

''सत्संङ्गिजीवनम्'' वचनामृतम्, शिक्षापत्री, गीताभाष्यम्, मानप्रमेय प्रकाशिका, हरि संभव महाकाव्यम् इत्यादयः ।

तत्र चिदचितोः भगवतः श्री स्वामिनारायणस्य विशेषणत्वन्तु ''यः आत्मनि तिष्ठन्नात्मनोऽन्तरोयमात्मा न वेद यस्यात्माशरीरं यः आत्मामन्तरो यमयति स त आत्माऽन्तर्याम्यामृतः ''यः पृथिव्यां तिष्ठन् पृथिव्या अन्तरो यं पृथिवी न वेद यस्य पृथिवी शरीरं यः पृथिवीमन्तरो यमयति स त आत्माऽन्तर्याम्यमृतः'' इत्यादिश्रुति निचयप्रतिपादित तच्छरीरत्वादेव । तत्र प्रमाणितम् चिदाचिदवस्तु शरीरतया तत्प्रकारं ब्रह्मैव सर्वदा सर्वशब्दाभिधेयम् । चिदचिदीश्वरश्चेति त्रयः पदार्थाः उक्ताः तथाहि श्रुतयः - क्षरं प्रधानममृताक्षरं हरः क्षरात्मानमीशते देव एकः । सर्वेवेदाः यत्पदमामनन्ति'' इति श्रुतिप्रामाण्यात् परब्रह्म पदाभिधेयः सर्वेश्वरः श्री स्वामिनारायणः मोक्षावाप्त्यर्थं तज्ज्ञानमेव मुमुक्षुभिः सम्पादनीयम् तमेव विदित्वाऽतिमृत्युमेति नाऽन्यः पन्थाविद्यतेऽयनाय इति श्रुतिप्रामाण्यात् ।

सच भगवान श्री स्वामिनारायणः सर्वदा चिदचिदविशिष्टः एवावतिष्ठते । तत्र चित् पदवाच्यो जीवः । एषः जीवः द्रष्टास्प्रष्टा, श्रोता, घ्राता, रसयिता, मन्ता, बोद्धा, कर्ता, विज्ञानात्मा पुरुषः इति श्रुति प्रामाण्यात् ज्ञानाश्रयः ज्ञानस्वस्मो वा जीवः ।

अचित पदवाच्यम्ज्ञानविरहितं तत्वम् । अतः चिद विशिष्टः अचित विशिष्टश्चसेश्वरः परमात्मस्वस्मः भगवान श्री स्वामिनारायणः ।

तत्र भगवतिश्री स्वामिनारायणे भगवान् शब्दस्यव्याख्या - भगैश्वर्येति धातुना भगमैश्वर्यमर्थात् षडैश्वर्यमस्त्यस्मिन्निति भगवान् यथा चोक्तम् -

ज्ञान शक्ति बलैश्वर्यवीर्य तेजांस्यशेषतः ।
भगवच्छब्दवाच्यानि विनाहेयैर्गुणादिभिः ॥

इत्यादि वचन प्रामाण्यात् ज्ञान शक्ति वलैश्वर्य वीर्थ तेजोस्म षड्बधैश्वर्यशालित्वात् स हि भगवान् पद वाच्यश्च । स एव भगवान श्री स्वामिनारायणः ''नित्यो नित्यानाम्'' यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णं कर्तारमीशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम् मुण्डकोपनिषदितिवचनात् दिव्य मङ्गल विग्रहश्चास्ति । अत एव श्रुत्युपवृंहणी भूतेतिहास पुराणादिषु बहुशस्तत्रतत्र भगवतो दिव्य मंगल विग्रहस्योपवर्णनं सङ्गच्छते - यथा वासुदेव माहात्म्यं प्रतिष्ठितमस्ति ।

स च सर्वेश्वरः भगवान श्री स्वामिनारायणः पर व्यूह विभवान्तर्याम्यर्चावतार स्रेण पंचधास्थितः । भगवतः श्री स्वामिनारायणस्य प्राक्परम्परा विषये संक्षेपेणात्र निरूप्यते -

परब्रह्म अक्षरब्रह्म वासुदेव नारायण लक्ष्मीनारायण श्री लक्ष्मीदेवी - श्री रामानुजाचार्य रामानंद स्वामी सहजानन्द स्वामी (स्वामिनारायण) तच्छिष्यासशिष्य परम्परात्मको धर्मज्ञान वैराग्य भक्त्यात्मको साधनचतुष्ट्यात्मको, परब्रह्मश्रीस्वामिनारायण विशिष्टोपासनाधारः जीव - ईश्वर - माया - ब्रह्म - परब्रह्मात्मकोपसनाधारीभूताविचारणा ।

आधुनिक भौतिक वादे बैमत्यकारणेन विवदमानानां साम्प्रदायिकानां विच्छृङ्खलितास्थिति दृश्यते । किन्तु नाना विधसम्प्रदायेष्वस्य श्री स्वामिनारायण संप्रदायस्य परम्परावैदिकपरम्परा वरीवर्तते । परम्परायामपि आस्तिकत्वम् । साम्प्रदायिकाः जनाः स्वेष्टदेवं सर्वतो भावेन प्रपूजयन्ति भौतिक सुखं प्राप्यान्ते मोक्षं लभन्ते । भक्ति प्राधान्यस्यास्यसम्प्रदायस्य परम्परा दृश्यते - नवधा भक्तिमङ्गीकृत्यदासस्वामिभावेनोपासनां कर्वन्ति ।

अतोऽस्यसम्प्रदायस्यानुयायिनः दृढतया सम्पूर्ण तया च साकल्येन साम्प्रदायिक वैदिक परम्पराजनित ज्ञानं विधायविश्वसन्ति । अस्य मार्गदर्शकाः आचार्याः यथा कथयन्ति तथैवानुयायिनः कुर्वन्ति ऐहिलौकिकं सौख्यञ्चानुभवन्ति । अन्ते शास्त्र विधिविहितानुष्ठानेन मोक्षञ्चापि लभन्ते ।

मन्ये भगवत्उपासना विषये वैदिकत्वमेव कारणं न अपितु भाव प्राधान्यमपिभवति तथैवात्र दृश्यते ।

सत्संग सुरभि :

हरिचरण के प्रति स्नेहभाव ही यथार्थ मोक्ष है

- अतुल भानुप्रसाद पोथीवाला (केनेडा)

पौष महीने की पूनम की सुनहरी रात्रि में नीलकंठ वर्णी नवलखा पर्वत पर चढने लगे । नवलखा पर्वत पर जाना बहुत ही भयानक था । उसके चारो तरफ दूर-दूर तक महाविकट वन था । जिसमें जाने का दूसरा कोई मार्ग नहीं था । उसमें बडे बडे शेर और हाथी रहते थे । जगह-जगह पर नदियां बहती थी । पशु-पंक्षियों की कोई कमी नही थी ।

नौ लाख सिद्ध पुरुष वहाँ स्थान-स्थान पर अपनी जमावट करते थें । दिन में कोई सिद्ध दिखाई भी नही देते थे । रात्रि में ही सभी नजर में आते थे । गिरि की ऐसी आश्चर्यमय अद्‌भूत कला को देखकर सिद्धो को दर्शन दिये । श्रीहरिने उनको बुलाकर कहा परंतु वे सब मुख से कुछ नहीं बोलते थे । इधर उधर भी नहीं चलते थे । सिद्धासन से नासिका के ऊपर एकाग्र दृष्टि रखकर काष्ट की भांति स्थिर ही रहें ।

वर्णिराज इस समग्र ध्यान का ध्यान से निरीक्षण किये । फिर ध्यान करके देखा तो यह सभी आश्चर्य पर्वत के ही थे ।

श्रीहरि के पावन चरण जैसे ही पर्वत पर पडे कि मूर्तिमान पर्वत ही श्रीहरि के पास आकर चरण पर गिरकर कहने लगे "हे भगवान ! मुझे कृतार्थ करने ही आप पधारे है ।" अन्य सिद्ध भी मूर्तिमान श्रीहरि के दर्शन करने आये । उन्होंने नीलकंठवर्णि को फलपुष्प अर्पित किये ।

श्रीहरि ने गिरि से पूछा, "तुम्हारी माया हमनहीं समझ पाए । आप कौन हैं ? रात्रि को दृश्यमान होनेवाले यह समग्र सिद्ध पुरुष कौन है ? स्थान-स्थान पर प्रज्वलित होनेवाली अग्नि क्या है ? सभी दिन को क्यों नही दिखाई देते ?

गिरिराज बोले, "आप तो सभी कुछ जानते है ? फिर भी पूछ रहे हो तो कहता हूँ। जितने ही पर्वत है उन सभी में मैं पूज्य हूँ यहाँ नौलाख सिद्ध रहतें हैं । उनके आश्रमों का ही यह प्रभाव है । बित्ते-बित्ते भरके गोल कुंड हैं । और वे गज-भर गहरे है । उसमें उन्होंने ऐसा प्रताप रखा है कि दिन में उसमें से पानी निकलता है और रात्रि में अग्नि प्रगट होती है । उनके साथ रात्रि में सिद्ध पुरुष प्रगट होते है । और उनको भी जो सिद्ध पुरुष होते है वेही उन्हे देख सकते हैं । सिद्धों के अलावाँ यहाँ और कोई नहीं आ सकता है । आप तो समर्थ ईश्वर है । आपकी बात ही कुछ और है ।"

उसके बाद श्रीहरि योगियों के पास जाकर बैठे । और योगाभ्यास के विषय में पूछने लगे । तब योगियोंने जो योगाभ्यास का यथार्थ रहस्य समझाया । श्रीहरि ने देखा कि उनके योगाभ्यास में बहुत ही कमी है ।

सिद्धपुरुषों से श्रीहरिने प्रश्न किया "आप जो यह तप करते है वह किस फल को अधिक मानकर करते हैं ।" अधिक फल के उद्देश्य बिना कोई यत्न नहीं करता है । हमने भी जन्म लिया है घर में रहे हैं । घर का त्याग करके विकट वन में विचरण किया है । इन सभी कार्यो में उद्देश्य था । उद्देश्य के बिना कोई भी कष्ट को सहन नहीं करता । तो फिर आप भी अपना उद्देश्य हमें बताइए ।"

सिद्ध पुरुष बोले । "हे महाराज ! आप तो सब कुछ जानते हैं फिर भी पूछते हैं । हठयोग बिना कोई बात हम नहीं समझ पाते । देह को अमर रखना ही सिद्धांत है । आप कह रहे है उस प्रकार प्रेम से करेंगे । आप हमारे हित के लिये ही आये हैं । इसीलिए हे योगेश्वर ! आप हमे कृपा करके उपदेश दीजिए ।"

सिद्ध पुरुष अत्यंत हठयोगी थे । परंतु भगवान के समक्ष मान रहित बनकर दीन वदन से हाथ जोडकर सब खडे थे ।

श्रीहरिने सभी सिद्धों के सामने देखा । फिर गंभीर वाणी में बोले, "हे सिद्धो ! आपकी साधना के प्रति निष्ठा वास्तव में प्रशंसनीय है । परंतु आपके उद्देश्य में फर्क है । अंतरदृष्टि करके देखिए देह में कौन सी वस्तु अच्छी है । मल, मूत्र, रुधिर आदि से युक्त कुंड जैसा यह देह है । इसकी जतन करने में कोई चतुराई नहीं है । आपके गुरु भी अवश्य ही देहाध्यासी होगे । एकमात्र आत्मा ही अमर है । आत्मा को अपना स्वरुप मानकर देह से अलग होने का नित्य आत्माभ्यास करना चाहिए ।"

श्रीहरिने मार्ग भूले हुए योगियों को ऐसा उपदेश दिया । गिरि के ऊपर बसने वाले सभी योगी तथा नौलाख सिद्धो के प्रति कृपा दृष्टि करके फिर से कहने लगे, "परब्रह्म पुरुषोत्तम श्रीहरि के स्वरुप का ही अखंड ध्यान करना ही योगाभ्यास का श्रेष्ठ फल है । आत्मदर्शी योगी हो कर देहदर्शी भोगी हो, परंतु सत्संग बिना कभी भी अज्ञान दूर नहीं होता है । इसलिए सत्संग करना चाहिए । मोक्ष को भी लोग अनेक प्रकार का मानते है । परंतु वे सभी विघ्न है । छोटे गड्ढे में से बडे कुएँ में गिरने जैसा ही है । थोडा जीवन छोटे गड्ढे के समान है और दीर्घ जीवन बडे कूएँ के समान समझना चाहिए । सत्संग के बिना यह समझ में नहीं आ सकता । इसीलिए देह को अमर रखने की बात छोड दो । देह को ध्यान से कभी भी शांति नही मिलती है । "हरिचरण में स्नेह हो यही यथार्थ मोक्ष मार्ग है ।"

नवलखा पर्वत के ऊपर की यह सभा एक विलक्षण सभा थी । पर्वत के ऊपर बसने वाले योगियों को उस दिन यथार्थ ज्ञान प्राप्त हुआ । सभी योगियों को श्रीहरि ने यथार्थज्ञान प्रदान किया ।

"हरिचरण में स्नेह हो यही यथार्थ मोक्ष है ।" सभी को बंधन से मुक्त करवाकर श्रीहरिने उत्तर दिशा की तरफ प्रयाण किया । वे नौलाख सिद्ध उन्हे रात्रि से दिखाई नहीं दिये । वे सभी आत्मस्वरुप बन गये । उनकी चित्तवृत्ति अब निरंतर हरिचरण में लीन हो गई ।

सत्संग बालवाटिका
संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

माला कैसे फेरना चाहिए

- शा. हरिप्रियदास (गांधीनगर)

किसी समय संतो की सभा लगी थी उस समय भगवान स्वामिनारायणने संतो से प्रश्न पूछा कि - इस समय चातुर्मास चल रहा है, आप लोग कितना माला फेरते हैं। कोई संत ने कहा महाराज मैं २०० माला फेरता हूँ किसी ने कहा मैं ऐकसौ किसीने कहा सवा दो सौ, किसीने कहा मैं सवासौ फेरता हूँ।

इस प्रकार जो जितनी माला फेरता था वह अपने यथार्थ को कह दिया। संतो में अग्रगण्य मुक्तानंद स्वामी से महाराजने सबसे प्रथम प्रश्न नहीं किया। सबसे पूछने के बाद उनसे पूछे कि अब स्वामी आप बताइये कितनी माला फेरत हैं ? तब स्वामीने कहा महाराज ? हमसे तो प्रतिदिन पचास माला ही हो पाती है।

इस सभा में कितने सत्संगी भी बैठे थे। उन सभी के मन में ऐसा हुआ कि यह छोटा साधु दो सौ माला फेरता है, मुक्तानंद स्वामी केवल पचास माला फेरते है। स्वाभाविक है कितनो को ऐसा होता है।

स्वामिनारायण भगवानने आज ऐसे क्यों पूछा होगा ? स्वामी आप केवल पचास ही माला फेरते है ? आप को इतना समय क्यों लगता है ? तब स्वामीने बताया कि महाराज माला तो १०८ मनके की होती है, उस माला को पचास बार फेरता हूँ, तब तक आपकी मूर्ति मेरे हृदय में रहती है, बाद में ध्यानस्थ स्थिति में माला की संख्या नहीं रहती।

मित्रों ! माला फेरते समय पचास मनके की एक माला और बनानी चाहिए जिसे बांये हाथ में रखकर दाहिने हाथ के १०८ मनके वाले माला की एक-एक करके गिन्ती हो सके।

मुक्तानंद स्वामी ने कहा इस गिन्ती के साधन को मैंनही रखता, बल्कि हृदय में आपके स्वरूप को रखता हूँ। यह ध्यान करते जाता हूं कि मेरे इष्टदेव का चरणारविन्द है, ये अंगुलिया है, यही निरखते हुए क्रम से पचास माला पूरा करता हूँ। जब पचास अंगो का चिन्तन पूर्ण हो जाता है तो पचास माला भी पूर्ण होजाती है।

श्रीजी महाराज ने सभा में बताया कि हे संतो ! आपके दोसौ, डेढसौ, सवा दोसो या सौ माला से प्रसन्न नहीं होता हूँ, केवल ध्यान की जो मुद्रा मुक्तानंद स्वामी करके माला फेरते है, भले वह कम हो, उसी से मैं प्रसन्न होता हूँ।

भगवान स्वामिनारायण ने मुक्तानंद स्वामी से कहा कि, संत-हरिभक्तो को याद रहे ऐसी कोई पद्यकी रचना करो।

प्रभु की आज्ञा पाकर मुक्तानंद स्वामी ने एक सुन्दर पद्य बनाया। जो त्यागी-गृही दोनो के लिये उपयोगी है।

भजो भाव थी अखंड जपमाला रे।
माला टाळे छे मन केरा चाणा रे॥
हरिनुं एक एक अंग उर धारो रे।
स्वामिनारायण नाम उच्चारो रे॥

इस प्रकार प्रभु के एक-एक अंग का ध्यान करते हुए स्वामिनारायण मंत्र बोलते जाओ। ऐसी ही माला भगवान को अच्छी लगती है।

मित्रो ! आप को ख्याल आ गया होगा, कि कितनी ही माला आप फेरे, वह महत्व का नहीं है, माला कैसे फेरे वह महत्व का है। मुक्तानंद स्वामी की तरह हम भी पचास ही माला फेरगे तो भगवान प्रसन्न होंगे।

यह आध्यात्मिकता की बात हुई, लेकिन भौतिक सिद्धि प्राप्ति करनी हो तो भी एकाग्रता की जरुरत तो पडती ही है। जैसे विद्याध्ययन काल में यदि एकाग्रता से भले ही थोडे समय के लिये बैठे तो भी उसे अधिक याद रह जाता है, लेकिन पढने के समय टी.बी. चालू करके, बात करते हुए पढेतो वह भले ही दश घन्टे वांचन करे उससे कोई फायदा नहीं होने वाला है। बड़ी बड़ी वैज्ञानिक खोज के पीछे एकाग्रता ही कारण है।

भले हमें ख्याल हो या न हो तो भी इस वैज्ञानिक चमत्कार के पीछे अथवा किसी भी स्थान पर पहुँचने के लिये उसकी तन्मयता ही कारणभूत बनती है।

•

सेवा का महामंत्र

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

आप जादूगर की जादूगरी तो देखे होंगे। जादूगर नाना प्रकार का खेल दिखाता है। वह जादूगर भी वरसोंतक साधना किया। साधना का अर्थ है - अभ्यास। अपनी जादुई विद्या का खूब अभ्यास किया। परिणाम स्वरूप वह आकाश से पत्थर की बरसात करना, मनुष्य को पक्षी बनाना, गुलाब के फूल पर आम का फल पैदा करना, मनुष्य को कुत्ता बनाना, इत्यादि कला का जो प्रदर्शन वह करता है तो उसमे उसकी विद्या, साधना एकाग्रता ही कारण भूत है। इस प्रकार की जादुई विद्या शीखकर वह जादूगर इधर-उधर घूमने लगा। तीन गाँव में अपनाजादू दिखाया। खराब नीति से जादूकर के गाँव के लोगो को दुःखी करने लगा। वह जादूगर खेल बताकर रुपये कमाने लगा। गाँव के लोगो को लालच देता, अपने अनुकूल करता, जब अनूकूल नही होते तब कहता, "नई करामात लाया हूँ, नही देखोगे तो पछताओगे" ऐसा कहकर सभी को जादू दिखाता और पैसा लेता। ऐसा कहने से उसका त्रास बढ गया।

जादूगर के त्रास से बचने के लिये गाँव के लोगों ने निश्चित किया कि किसी महात्मा की शरण में जाना चाहिए। वेही हम सभी की रक्षा कर सकते हैं। ऐसा विचार करके गाँव के लोग संत की खोज में निकलपडे। खोजते-खोजते जंगल में पहुँच गये वहाँ उन्हे एक आश्रम दिखाई

दिया, जिसमें वे सब प्रवेश किये । वहाँ एक वृक्ष के नीचे एक महात्मा ध्यानस्थ बैठे थे । उन महात्मा के चरण पर गाँव के लोग माथा टेकते है । महात्मा, ध्यान मुद्रा से जागते है और आने का कारण पूछते है। महात्मा जी के सामने सभी हाथ जोडकर अपने दु:ख का कारण बताते हैं । इसके साथ जादूगर से वचने का उपाय भी पूछते हैं । यह सुनकर महात्माजी तीनबार सेवा करो-सेवा करो ऐसा बोलकर पुन: आंख बन्द करलेते हैं । बाद में गाँव के अनुयायी सभी मिलकर यह निश्चित करते हैं कि सेवा ही परमधर्म है ऐसा महात्माजीने बताया है, यही सूत्र गांव वालो को आकर सुनाते हैं ।

एक गाँव वाले ने महात्जी के इस मंत्र का यह अर्थ किया कि हम सभी उस जादूगर की सेवा करें । जब गांव में जादूगर आवे तब हम उसका स्वागत करें । उसके सचि का भोजन करावे । सभी लोग ऐसा ही करने वगे । यह देखकर जादूगर के मन में हुआ कि हम तो उन्हें लूटने आये है और ये विचारे हमारी नि:स्वार्थ सेवा कर रहे हैं । हमें इनके सुख का ख्याल रखना चाहिए । ऐसा समझकर उस गाँव के लोग भी सेवा मंत्र का उपयोग करके गरीबों मे दान देना एवं गरीबों की सेवा करना, असहायों की सेवा करना यहाँ भी उस जादू का भी प्रभाव नहीं पड,ा किसी के पास जादू देखने का अवसर ही नहीं था । निराश होकर वह वहाँ से तीसरे गाँव में गया वहाँ भी गाँव वाले महात्माजी के "सेवा" शब्द का पूर्णतया उपयोग कर रहे थे, वेआपस में एक दूसरे की सहायता करना ही सेवा मानकर अपनी प्रगति कर रहे थे, परिणामत: जादूगर की जादुई विद्या निष्तेज हो गयी, जादूगर समझ गया कि सेवा के सामने हमारा जादू निष्तेज है, अत: वह भी अपने जादू को छोडकर सेवा में लग गया । अब वह जादूगर से सेवकजन हो गया ।

मित्रो ! इसी तरह आप लोग भी "सेवा करो" इस मंत्र का जीवनमें उपयोग करो, जिस प्रकार जादूगर सज्जन बन गया इसी प्रकार आप भी सज्जन बने । सेवा करने वाला सदा सुखी होता है । इसीलिये गुजराती में एक कहावत है "जे करे सेवा ते पामे मेवा" इसलिये आप भी गाँव की देश की, धर्म की खुब सेवा करना । जिससे अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण अपने ऊपर प्रसन्न होंगे, क्यों कि भगवान स्वामिनारायणने शिक्षापत्री में कहा हैं "सेवा मुक्तिश्च गम्यताम्" ।

सच्चे मन से, सच्चे स्थानपर सेवा करने से यन्त्र - तन्त्र - जादूगर की विद्या कभी काम नहीं करती है । बल्कि जीवन में प्रकाश ही फैलता है । अत: सेवा करनी चाहिए । इस क्रिया से भगवान एवं संत की कृपा मिलती है ।

एकादशी की नियमित सभा में लाभ लेनेवाली बहनो का प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने अपने हाथों से सन्मान-आशीर्वाद दिया ।

समस्त सत्संगी बहनो को दिव्य आशीर्वाद के साथ प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री जय स्वामिनरायण प्रदान करती हैं ।

आज्ञा के साथ सभी सत्संगी बहनों को मालूम हो की, प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री की आज्ञा-आदेश से बहनों की हवेली में प्रति एकादशी को दोपहर में २-०० से ४-०० सत्संग सभा कुछ समय से चल रही है । जिस के अनुसंधान में सं. २०६३ कार्तिक सुद-११ प्रबोधनी एकादशी तक आयोजित सत्संग सभा में जो बहने २० सत्संग सभामें हाजर रहेंगी उनका सं. २०६४ कार्तिक सुद-११ (प्रबोधनी)के शुभ दिन प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के शुभ वरद् हाथों से सन्मान करके (इनाम के साथ) दिव्य आशीर्वाद प्रदान करेंगी । जिस कारण सभी बहने सभा में उपस्थित होकर विश्वास हेतु हवेली में रखे पत्रक में नाम-पता लिखवा दें ।

खास सूचना : २० से ५० वर्ष तक की उम्र वाली बहने ही यह लाभ ले सकती है ।

- आज्ञा से

श्री स्वामिनारायणमंदिर कालुपुर (गादीवालाश्री की हवेली)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने नीचे दर्शित मंदिरो में नये महंत स्वामीकी नियुक्ति की है उसकी स्मरणिका

नारायणघाट श्री स्वामिनारायण मंदिर

स.गु. महंत स्वमी देवप्रकाशदासजी (स्कीम कमीटी सभ्य)

गुरु स.गु. स्वामी कृष्णस्वरूपदासजी (काका स्वामी)

अयोध्या श्री स्वामिनारायण मंदिर

स.गु. महंत स्वामी देवप्रसाददासजी

गुरु स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदसाजी (दिल्ही मंदिर महंतश्री)

मथुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर

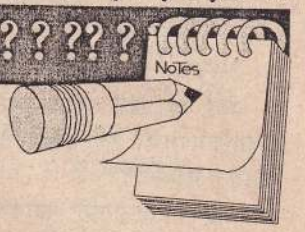
स.गु. महंत स्वामी आनंदप्रसाददासजी (कांकरीया मंदिर के कोठारी) गुरु स.गु. स्वामी नारायणसेवादासजी और स.गु. महंत स्वामी भानुप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी (मूली)

उनावा श्री स्वामिनारायण मंदिर

स.गु. स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी

गुरु स.गु. शास्त्री स्वामी देवचरणदासजी

??????????????? प्रश्न पेटी ???????????????



साधु भक्तिनंदनदास गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी

(श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर)

प्रश्न : १ वचनामृत में स.गु. मुक्तानंद स्वामी के कितने प्रश्न है ?

प्रश्न : २ जीव के मुक्ति का कारण क्या है ? यह प्रश्न किसने पूछा था तथा इस उत्तर का सारांश क्या है ?

प्रश्न : ३ प्रातः काल किस भगवान के स्मरण से भय दूर होता है ? यह बात किस कवच में आयी है ?

प्रश्न : ४ जिसे पूजा में सेवा में कथावार्ता में तथा कीर्तन में खूब श्रध्धा हो, भगवान के माहात्म्य को जानता हो, जिसमें कभी गौण भाव न रखता, हो, ऐसी वात श्रीजी महाराज ने किस वचनामृत में की है ? तथा इसके बाद कौन सी बात बता कर महिमा को समझाया है ?

प्रश्न : ५ ऋषिरुपधरं तपश्चरं ह्यवमन्देत कदापि कश्चन । यह श्लोक पूर्ण कीजिये ?

प्रश्न : ६ जेतलपुरधाम संस्कृत पाठशाला किस जगह स्थापित हुई थी ? किसने स्थापित की, किस साल में की, इस समय उसे कितना वर्ष हुआ ?

प्रश्न : ७ रंगभर रास रमे रे वालो मारो रंगभर रास रमे, गोपी ने मनडे गमे रे, वालो मारो रंगभर रास रमे, इस पद के रचयिता का नाम लिखिये ?

नवम्बर २००६ महीने के प्रश्नपेटी के सच्चे उत्तर तथा उत्तर देने वालों का नाम ।

(१) कारियाणी के ५ वें वचनामृतमें वस्ताखाचर के दरबार से । (२) ग.म. २१ वा वचनामृत । (३) अयोध्यापुरी प्रथम वसाये, जो भरतखंड के बीच में है, जहाँ से चारो धाम समान दूरी पर है । (४) शिक्षापत्री के ७५ वें श्लोक में । (५) "आसो आव्यो अलवेलडा रे, आवी हरे, हरि दुःख रे, हरिवर आवा थया केम आ समे रे," इस पद्य के रचियता प्रेमानंद स्वामी है । (६) "एटलुं मेली आही आव्यो छु, उर करी विचार रे, भूखे मरता भेख लिये छे गणसो नहि एनी हार रे...." निष्कुलानंद स्वामी । (७) पुत्र के लिए सत्रह हजार वर्ष ।

परमार सुहानी, शोभना, मनीष
साकरबेन नटवरबाई पटेल (नांदोल)
अजय घनश्यामभाई पटेल (नांदोल)
अंजनाबहन मनुभाई पटेल (नांदोल)
शारदाबहन कांतिभाई पटेल (नांदोल)
कैलासबहन विष्णुभाई पटेल (नांदोल)
सां.यो. रंजनबा, रेखाबा (बालासिनोर)
सां.यो. रसीलाबा, अस्मिताबा (हवेली)
हेतल, क्रिष्ना, रेखा (विराटनगर-ओढव)
सां.यो. रंजनबा, नानीबेन (विराटनगर-ओढव)
अल्काबेन अश्विनभाई सुखडीया (मयुरपार्क)
निर्मळाबेन, शांताबेन (टीकर) हळवद
सां.यो. कंचनबा, कुंदनबा (मेडा)
सांखला जयेश पी. (कुजाड)
सां.यो. मंजुबा, भारतीबा (हवेली) अहमदाबाद
सां.यो. उषाबा, शिल्पाबा (हवेली) अहमदाबाद
परमार शांतिभाई वालजीभाइ तथा सोनलबेन, अल्पेशकुमार (बळोल-भाल)
मनसुखभाई ठाकरसीभाई (विराटनगर)
किशोरभाई डी. वेकरीया (विराटनगर)
केयुर पी. रादडीया (विराटनगर)
लालजी आर. ठक्कर (विराटनगर)
मेधाबेन कमलेशकुमार (कुहा)
मोदी अमृतलाल मगनलाल (सेटेलाईट)
पटेल गोरधनदास शंकरदास (सोजा)
मोदी अमृतलाल कचरदास (सोजा)
माणेकबेन मणीलाल पटेल (दहेगाम)
वैशाली, कौशिका, चंद्रिका (जीरागढ-हालार)
श्री घनश्याम बालिका मंडल (जीरागढ)
पटेल रेखाबेन किर्तीकुमार (ऊंझा)
अरविंदाबेन भावसार (चांदलोडीया)
वीणाबेन आर. भावसार (अहमदाबाद)
हसुमतीबेन व्यास (अहमदाबाद)
ठक्कर हसुबेन कनैयालाल (भाडुआतनगर)
हंसाबेन ईश्वरभाई पटेल (सापावाडा)

नोंट : १. प्रश्नपेटी का उत्तर प्रत्येक महीने की २२ तारीख तक आना अनिवार्य है । इसके बाद के आए हुए उत्तर का नाम लिखा नहीं जायेगा । जिसको सभी लोग जानलें ।

२. "भक्तिसुधा" श्री स्वामिनारायण मासिक में समाविष्यट हुआ है । जिस कारण भक्तिसुधा लेख लिखने वाली बहनो के श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय, श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद के पते पर लेख लिखना है ।

।। भक्तिसुधा ।।

घनश्याम कहाँ है ?

- तरलाबहन अतुलभाई पोथीवाला

प्रातः हुई, बडे भाई रामप्रतापजी एवं सुवासिनीभाभी उठी देखा तो घनश्याम महाराज बिस्तर पर नहीं थे । उन्हें हुआ कि आज हो सकता है नदी नहाने जल्दी चले गये होंगे । नहाकर अभी आयेंगे । बडे भाई स्नान करके खेत में गये ।

भाभीने घनश्याम के लिये नास्ता बनाया । प्रातः कालीन कार्य में किसी को घनश्याम याद नहीं आये ।

दोपहर हो गयी फिर भी घनश्याम नहीं आये ? सुवासिनी भाभी को चिंता होने लगी । घनश्याम साथ में भोजन करने बैठते थे । अब चिंता बढने लगी थी । घनश्याम के मित्रों से पूछने जाती हैं । घनश्याम कहाँ गये ? तुम लोग जानते हो ? क्यो घर अभी तक नहीं आये ?

बाल मित्र कहने लगे । हमे पता नहीं है । नदी नहाने के समय घनश्याम नहीं थे। कहीं पता नहीं चला । इस तरह साम हो गयी । भाभीने भी कुछ भोजन नहीं कीया। एक आदमी को भेजकर खेत से रामप्रतापभाई को बुलवाई ।

रामप्रताप भाई एवं इच्छारामभाई को पता चला कि घनश्याम कहीं मिल नहीं रहे हैं । आँखो से अश्रुधारा बहने लगी । बड़े व्याकुल हो गये । सभी मंदिरो में खोजने लगे । नदी के किनारे गये । वन में खोजने गये । छपैया का चक्का-चक्का खोज डाले, लेकिन घनश्याम कहीं मिले नहीं ।

भाभी की अश्रुधारा बन्द ही नहीं हो रही थी । घनश्याम की याद में कुछ करने की इच्छा नहीं हो रही थी । सभी घनश्याम बिना विह्वल होने लगे थे । भाई भाभी के स्दन का पार नहीं था ।

सुवासिनी भाभी तो विक्षिप्त होकर कहने लगी कि आप खोजने नहीं जा रहे हैं । हमारे सास स्वशुरने कहा था कि घनश्याम का ख्याल रखना मैं ख्याल नहीं कर सकी मेरी बुद्धि मारी गयी थी, उनका जतन नहीं कर पायी, हृदय में उतार नहीं पाई - जिसका परिणाम आज देखने को मिला बड़े भाई विचार करने लगे कि कल मैंने कुछ कह दिया था सन्यासी हो गये क्या ? लेकिन कपड़ा जूता सभी यहीं है क्या लेकर गये होंगे - नंगे पाँव (कैसे चलेंगे) । जंगल में कौन भोजन देगा । जंगली प्राणी घनश्याम को खाजायेंगे । यह सुनकर सगे सम्बन्धी आगये, सभी रोने के सिवाय कोईउपाय नहीं बता सके । यथासंभव खोजने का सभी पुनः प्रयास प्रारम्भ कर दिये फिर भी घनश्याम कहीं मिले नहीं । सभी थक कर वापस आगये । सभी के मन में एक संताप के सिवाय कुछ था ही नहीं । सभी लोग उनके प्रति अपनी अपनी भावना व्यक्त करने लगे । दशरथ राजा की जो स्थिति राम के वनगमन पर थी ठीक वही स्थिति आज यहाँ रामप्रतापभाई सुवासिनी भाभी के यहाँ हो रही थी । बालपन की प्रीति एक पल में आपने वैसे ही छोड दी जैसे सांप कांचली छोडता है, जले जंगल को जैसे मृग छोड देता है । आपके विना हम सभी रो-रोके मर जायेंगे । हम लोंग आप के विना बहुत व्याकुल हैं । कहीं शांति मिल नहीं रही है । इसीलिये हे घनश्याम आप कहाँ हो ?

दोनो भाई एवं भाभी तथा बाल मित्रों के साथ सगे सम्बन्धी घनश्याम के विरह में विलाप कर रहे थे ।

•

वनविचरण

- सांख्ययोगी शांताबा

नीलकंठ वर्णी घर से निकल कर वन के मार्ग पर चल दिये । नदी में डुबकी मारे और सामने निकल गये । प्रातःकाल वंशीपुर में पहुंच गये । शिकार खेलने आये हुएराजा को वर्णी का दर्शन हुआ । वहाँ पर राजा एवं पत्नी तथा पुत्रियों ने वर्णी का दर्शन किया । सुंदर स्वस्थ देखकर रानी ने अपनी पुत्रियों का विवाह करने को कहा । वर्णीने कहा माता मेरी तपस्या की पूर्णता पश्चिम में है । यहाँ तो मैं आपके तप के कारण आया हूँ, यह आपका भाग्य है ।

सम्वत १८५० आषाढ महीने में वर्णी काले पर्वत से आगे बढे । रास्ते में भूत-प्रेत तथा अन्य भैरवादिक आये सभी को हनुमानजीने मार भगाया । वहाँ से मुक्तनाथ की तरफ प्रयाण किये । मार्ग में हिमालय मनुष्य के स्थ में मिला । उसने वर्णी के दर्शन करके आनन्द की अनुभूति की । मार्ग में धवलगिरि एवं नीलगिरी को पारकर के पुलहाश्रम भगवान मुक्तनाथ का दर्शन किये । पश्चात् भरत कुण्ड में स्नान किये । वहीं पर तप करने लगे । दोनो हाथ ऊपर करके एक पैर पर खड़े होकर सूर्यनारायण को प्रसन्न करने के लिये तप करने लगे । वहाँ धर्मभक्ति वर्णी की सेवा में दिव्य स्थ धारण करके उपस्थित हो गयी । सम्वत् १८५० प्रबोधिनी एकादशी की रात्रि में भगवान सूर्यनारायण को प्रसन्न किये । परिणाम स्वस्थ सूर्यनारायण उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन दिये । दर्शन देकर वर्णी को तीव्र वैराग्य का वरदान दिये । वरदान देकर अंतर्ध्यान हो गये । दूसरे दिन पुलहाश्रम से चल दिये । मार्ग में नाना प्राणियों को ज्ञान देते हुए बुटोलनगर में पहुँच गये । वहाँ के राजा एवं रानी ने पांच मास पर्यन्त अपने राज भवन में रखकर सेवा कि । उन दम्पती को उपदेश करके वर्णी निर्जन वन की तरफ प्रयाण किये । जहाँ पर एक वटवृक्ष के नीचे तप करते हुए तपस्वी को देखे वह तपस्वी उठकर वर्णी से गले मिले । बडे आनन्दित हुए । और कहने लगे कि आप की ही प्रतीक्षा में मै था । आप जैसे योगी का दर्शन संयोग से हो गया है ।

अब आप इसी आश्रम में रहिये । उस आश्रम में गोपाल मुनि द्वारा अष्टांग योग को सीखकर सिद्धि प्राप्त किये । बाद में गोपाल मुनिको श्रीकृष्ण के रूप में दर्शन देकर गोलोकधाम में भेजे । गोपाल मुनि की और्ध्वदेहिक क्रिया करके पोखरा की तरफ प्रस्थान किये । वहाँ पाठशाला में वेद पाठी बटुओं को देखकर बहुत प्रसन्न हुए । सती गंगा, नारायण गंगा, भूरी गंगा, त्रिशुली गंगा में स्नान करके पावन किये । नेपाल की राजधानी काठमांडू में आये । यहाँ का राजा रणबहादूर असाध्य रोग से पिडित था । उसके रोग को अपनी साधना शक्ति से ठीक किये एवं उनके यहाँ कैद में रखे हुए साधुओं को छुडवाये । वहाँ एख मास रहकर उपदेश दिये । आदिवाराह तीर्थ में दर्शन देकर बंगाल से होते हुए सिरपुर नगर में सिद्धवल्लभ राजा के कल्याणार्थ पधारे । मंत्र-तंत्र तथा दूषित विद्या में लगे हुए को दूर किया तथा तांत्रिकों की विद्या का नाश किया । वहाँ से चलकर पूर्व में कमाख्या देवी के स्थान में आये । वहाँ देखा तो एक महान् तांत्रिक जो पिबैक के नाम से प्रसिद्ध था । सभी देवी देवताओं को तथा जनता को अपनी तांत्रिक विद्या से वस में कर लिया था । वर्णी को देखकर उसने नाना प्रकार के अभिचारिक तंत्र विद्या का प्रयोग किया । बडी-बडी कृत्याओं को मारने के लिये भेजा । काल भैरव - बटुक भैरव इत्यादि को भेजा । सभी जब वर्णी से परास्त हो गये तो स्वयं पिबैक वर्णी की शरणागति स्वीकार करली । वर्णी वहाँ पर एक मास तक स्के रहे ।

•

आइये ज्ञान यज्ञ मे

- सांख्ययोगी मंजूबा, भारतीबा गुरु गोदावरी बा (हवेली) अहमदाबाद

जब तक अपने में ज्ञान नहीं आयेगा तब तक सभी क्रिया व्यर्थ है । ज्ञानपूर्वक की गयी क्रिया अलौकिक आनन्द को देने वाली होती है । समझ के साथ का आचरण अर्थात् ज्ञान । वह भी ज्ञान होना चाहिए कि भक्ति क्यों ? भजन क्यों ? देवदर्शन क्यों ? प्रातः क्यों उठे ? यज्ञ क्यों ? इन सभी की समझ ही ज्ञान है । इस प्रकार का ज्ञान अपने जीवन में उतरे, स्थिर रहे, तभी कल्याण सम्भव है । संसार का भय ज्ञान के विना मिटतानहीं है । ज्ञान होने के बाद ही मिटता है । जब तक अज्ञान हो तब तक भय दूर नहीं होता । भय दूर करने के लिये ज्ञान की आवश्यकता है ।

एक जंगल के एक आश्रम में रहते हुए गुरुजीने शिष्य से कहा वत्स ! पर्णकुटी से पुस्तक ले आओ । शिष्य पर्णकुटी मे गया, वहाँ जाकर जोर से चिल्लाया और दौडते हुए बाहर आ गया । गुरुने कहा क्या हुआ ? शिष्यने कहा गुरुजी कुटी में सर्प है । गुरु साथ में जाकर देखे तो कही सर्प नहीं । उन्होंने कहा अरे अभी तो इसे स्वच्छ करवाया यहाँ कहां सर्प आयेगा ? कहाँ है सर्प ? गुरुजी बीच में बैढा था । गुरुजीने कहाँ सर्प बीच में नही बैठ सकता । सर्प एवं पाप छिप कर बैठते है । पुण्य तो समाज में होता है । कोई शुभ काम करें तो उसका फोटो लिया जाता है । कोई पाप करे तो उसका फोटो नहीं जाता । पाप छिपकर होता है । सांप छिपकर चलता है । बीच में कभी नहीं चलता ।

गुरु बडे समझदार थे । वे समझ गये कि शिष्य से कुछ भूल हो रही है । सर्प बीच में नहीं हो सकता है ? फिर भी शिष्य अपनी टेक पकड़े हुए था । बाद में गुरुजीने कहा तू ऐसा कर तुझे मैं मंत्र बताता हूँ इस मंत्र का जप कर, फिर तूं भीतर जा, ऐसा करता है, भीतर जाता है फिर भी उसे सर्प दिखाई देता है अब गुरुजीने कहा तूँ प्रकाश लेकर भीतर जा, जब प्रकाश लेकर भीतर गया तो उस प्रकाश में उसे सर्प नहीं बल्कि डोरी दिखाई दी । उसे यथार्थ ज्ञान हो गया कि यह सर्प नहीं था बल्कि डोरी थी । इसी तरह व्यक्ति झूठे संसार के प्रपंच में सर्प की बुद्धि करके परेशान है जब उसे यथार्थ ज्ञान होता है तब मार्ग मिलता है । यथार्थ ज्ञान के लिए सच्चे गुरु की जरुरत होती है ।

जैसे बहते पानी में प्रतिबिंब दिखाई नहीं देता, स्थिर पानी में प्रतिबिंब दिखाई देता है । इसी तरह जब तक मन अस्थिर है तबतक ब्रह्मअन्तर दृष्ट नहीं हो सकता । बुद्धि की स्थिरता तथा परमात्मा का दर्शन ज्ञान से मिलता है । ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है । कथा वार्ता ज्ञान यज्ञ है । ऐसे ज्ञान यज्ञ में बैठने से स्थिरता आती है । हृदय निर्मल होने लगता है ।

इसीलिये भगवान स्वामिनारायण ने वनचामृत में कहा है कि यज्ञ की अपेक्षा ज्ञान यज्ञ श्रेष्ठ है । जिसे कथावार्ता में रुचि नहीं है, उसके जीवन से दुर्गण कभीनहीं जाता है । सद्गुण कभी नहीं आता है ।

अब यह प्रश्न हो सकता है कि यह ज्ञान कैसे प्राप्त करें ? ज्ञान प्राप्त करने कहाँ जायें ? जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु की निश्चित दुकान होती है । फिर भी उत्तम वस्तु सभी जगह नहीं मिलती । उत्तम वस्तु के लिये निश्चित स्थान होता है । इसी प्रकार उत्तम ज्ञान प्राप्त करने के लिये श्रीजी महाराजके चरणों से अंकित एवं जहाँ पर भगवान अनेको बार उत्सव किये है, जहाँ पर महाप्रभु निवास किये है । जहाँ पर आने के साथ ही मन में आनन्द की अनूभूति होने लगती है । जहाँ मन स्थिर हो जाता है । जहाँ पर महाप्रभु स्वयं अपनी बाहों में भरकर अपने स्वरूप श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये है । ऐसे महान तीर्थ मेंअपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.अ.सौ. गादीवालाकी हवेली में प्रति एकादशी को प.पू. गादीवाला के शुभ सानिध्य में दोपहर दो बजे से ४ बजे तक ज्ञानयज्ञ का प्रवाह बहता रहता है । ऐसे दिव्य आनन्द का लाभ लेने के लिए प्रत्येक एकादशी को एक वर्ष पर्यंत २०६३ सम्वत से २०६४ सम्वत् की कार्तिक शुक्ल एकादशी तक जो २० एकादशी का लगातार लाभ लेंगी उन्हें प.पू.अ.सौ. गादीवालाके हाथों से सम्मानित किया जायेगा ।

भुज मंदिर के पू. महंत स्वामी हरिस्वरुपदासजी का अक्षरवास





कच्छ प्रान्त के अपने मुख्य मंदिर भुज श्री स्वामिनारायण मंदिर के वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध, तपस्वी पूज्य महंत पुराणी स्वामी हरिस्वरूपदासजी ता. ३०-१०-२००६ कार्तिक शुक्ल-८ के दिन सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण का अखंड भजन स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए। उनके अक्षरवास से श्री नरनारायणदेव देश में एक बडे संतकी महत्व की कमी हुई है।

पूज्य महंत स्वामीश्री का पूर्वाश्रम में सुखपुर गाँव संवत १९६८ कार्तिक शुक्ल-७ के पवित्र दिन परश्री देवजीभाई आंबाभाई खेताणी पिता और माताश्री कुंवरबा के घर मे जन्म हुआ था। संप्रदाय के अनेक संत पुरुषोकी तरह वे भी छोटी सी उम्र में वैराग्य हेतु भुजमंदिर में पार्षद के रूप में सेवा करने हेतु माता-पिता की आज्ञा लेकर आये और थोडे ही समय में संप्रदाय के रीति-नियम के अनुसार भागवती दीक्षा ग्रहण करके स्वामी हरिस्वरूपदासजी के नाम से प्रसिद्ध हो गये।

पूज्य स्वामी अत्यंत निर्मानी, निराभिमानी, वैराग्य में बहुत ही तत्पर श्रीजी महाराज एवं श्री नरनारायणदेव गादी के आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के अनुसार सदैव नियमों का पालन करते थे, तथा भुज के संतो को भी वही उपदेश देते थे। ७९ वर्ष के त्यागी संत के रूप में ३० वर्ष से भुज श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत पद की शोभा को बढा रहे थे। उस समय वे कच्छ देश के अलावा इंग्लेन्ड और आफ्रिका के केनिया युगान्डा आदि देशो में कच्छ के सत्संगियों को मूल संप्रदाय-सत्संग का पोषण संवर्धन करके संत मंडल के साथ मिलकर उसका प्रचार-प्रसार किया। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से इंग्लेन्ड और आफ्रिका में कच्छ के हरिभक्तों के संपूर्ण सहयोग से कई मंदिरो का निर्माण करवाया था। कथा-वार्ता द्वारा हजारो लोगो को मुमुक्षु बनवाया था। पश्चिम के भौतिकवादी देशों में स्वामीश्री जब पधारते थे तब अपने सचोट सदुपदेश से अनेक व्यसन में फसे लोगो को सद्मार्ग पर लाकर उन्हें मुमुक्षु सत्संगी बनाये थे।

अंतिम कुछ वर्षो से खराब तबियत के कारण अपनी तमाम प्रवृत्तियों के प्रति ध्यान छोड़कर भजन-भक्ति की तरफ आश्रित हो गये थे। अपने देह के निर्वाह के लिए जितना उचित भोजन होता है उतना ही संयमित भोजन वे ग्रहण करते। कुछ समय से उनकी तबियत कुछ अधिक खराब होते ही अहमदाबाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री और प.पू. बडेमहाराजश्री को जानकारी प्राप्त होते ही ताबडतोड भुज मंदिर स्वामीजी के समाचार पूछने तथा उनको दर्शन देने हेतु वहाँ पधारे थे। पूज्य महंत स्वामीश्री को प.पू. बडे महाराजश्री के साथ बहुत ही आत्मभाव और हृदय के अंतर से भावना जुडी थी। इसी कारण उनके अंतिम दर्शन करके पंच भौतिक देह का त्याग करने की इच्छा हुई थी, हुआ भी कुछ ऐसा ही। प.पू. दोनो आचार्य महाराजश्री पूज्य स्वामी को अंत समय में प्रत्यक्ष मिलकर उनके स्वास्थ्य का समाचार पूछकर, उनके पास बैठकर, अत्यंत सुख देकर-आशीर्वाद प्रदान करके उन्हें प्रसन्न किये। और कुछ ही समय के बाद पू. स्वामीश्री ने इस नश्वर देह का त्याग करके अक्षरधाम के निवासी हो गये। इस प्रकार पूज्य स्वामी के अक्षरवास से संप्रदाय में तपस्वी और ज्ञानी संत कीकमी उत्पन्न हुई है। भुज मंदिर के नियुक्त नये महंत स्वामी पुराणी धर्मनंदनदासजी इस पद का गौरव बढे और कच्छ के सत्संग की उनके कार्यकाल दरम्यान बहुत ही अभिवृद्धि हो ऐसे शुभआशीर्वाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने प्रदान किया था।

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर के रंग महल में श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान जब अहमदाबाद पधारते तब जिस स्थान पर वे स्वयं निवास करते और सदैव अपने आश्रितो को अलौकिक दिव्य सुख देते थे ऐसे "रंग महल" में प्रस्थापित सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज का पाटोत्सव अभिषेक कार्तिक शुक्ल-१२ को प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ वरद् हाथो से वेदविधिपूर्वक धूमधाम से संपन्न हुआ। पूजारी स्वामी परमेश्वरदासजी की प्रेरणा से प.भ. सुभाषभाई रावजीभाई पटेल (उवारसदवाले) के परिवार ने पाटोत्सव का यजमान बनकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किये थे।

श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडलने परंपरागत एकादशी की रात्रि को श्री नरनारायणदेव समक्ष सुमधुर यंत्रो के साथ उत्सव किया था। कार्तिक शुक्ल-१२ की प्रातः प.पू. बडे महाराजश्री उत्सव में पधारकर दर्शन प्रदान करके उत्सव मंडल को प्रोत्साहित करके दिव्य आशीर्वाद प्रदान किये। *- कोठारी धर्मप्रकाशदास*

इडर श्री स्वामिनारायण मंदिर

इडर श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से दिपावली में ठाकुरजी का अन्नकूट उत्सव धामधूम से मनाया गया। आस-पास के गाँव के कई हरिभक्तोंने दर्शन का लाभ लिया था। उसी प्रकार साबरकांठा कुकडीया मंदरि में भी अन्नकूट का उत्सव किया गया। वहाँ मंदिर के पूजारी गौरीशंकरभाईने सुंदर सेवा करके सभी की प्रसन्नता प्राप्त की थी। *- साधु सत्यसंकल्पदास*

महुन्द्रा मंदिर का प्रथम पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महुन्द्रा श्री स्वामिनारायण मंदिर में ठाकुरजी का प्रथम पाटोत्सव का.व.-३ ता. ८-११-०६ के दिन धूमधाम से मनाया गया। इस प्रसंग के उपलक्ष में समूह महापूजा का आयोजन किया गया था। जिसमें कई भक्तोंने लाभ लिया था। महापूजा विधिपूर्वक शा.हरिजीवनदासने करवाई थी। हरिभक्तों ने महापूजा, अभिषेक और अन्नकूट केदर्शन का लाभ प्राप्त किया था। *- विष्णुभाई आर. पटेल*

चलोडा (जीतबा का धोलका देश)

चलोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. १-१०-०६ केदिन श्रीहरि सन्मुख सुंदर अन्नकूट का भोग लगाया गया। धोलका मंदिर के महंत स.गु. स्वामी जगतप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन-प्रेरणा से प्रसंग की शोभा ही बढ गई थी। *- जयंतीभाई डी. पटेल*

देवानंद स्वामी के बलोल (मूली, भाल) गाँव में प्रथम पाटोत्सव मनाया गया

मूली श्री राधाकृष्ण देव संस्थान के स.गु. देवानंद स्वामी के जन्म स्थान बळोल (भाल) गाँव के श्री स्वामिनारायण मंदिर (भाई-बहनो का) प्रथम पाटोत्सव श्री नरनारयणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य श्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. बडे महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से मूली के महंत शा. ज्ञानवल्लभदासजी, नाथद्वारा मंहत स्वामी धर्मस्वरूपदासजीने ठाकुरजी की पाटोत्सव आरती उतारी थी। प्रासंगिक सभा में मूली के महंत स्वामी, स.गु. हरिस्वरूप स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संतोने बळोल गाँव के सत्संग की श्री राधाकृष्णदेव-श्री नरनारायणदेव के वफादारी निष्ठा की प्रसंशा की और गाँव के वचनामृत के प्रखर ज्ञाता प.भ. कानाभा सिंधव, प.भ. जीवाभा चावडा और प.भ. नारणभा खेर को याद किया और उनकी निष्ठा वफादारी समस्त गाँव के समस्त हरिभक्तों में दिखाई दे रही थी। अमेरिका से सलालवाले प.भ. मणीभाई पटेल तथा मूली के देव स्वामी तथा गुलाब भगत आदिने भी अच्छा लाभ प्राप्त किया था। गाँव में खेती की मौसम होने पर भी दर्शनार्थियों की भीड विशेष थी। *- लक्ष्मणभाई जे. चावडा*

नया वणझर (सरस्वेज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से और स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन के अनुसार ठाकुरजी का पाटोत्सव ता. ८-११-०६ के प्रातः ७-०० बजे वेदविधिपूर्वक किया गया। प.भ. राजुभाई गज्जर, प.भ. प्रकाशभाई ठक्कर और नीतीनभाई ठक्करने सेवा का लाभ लिया था। स्वामीने कथा-वार्ता करके हरिभक्तों को प्रसन्न किया था। *- कोठारी रमणभाई*

अपनी शिक्षण संस्था के समाचार

ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी शिक्षण ट्रस्ट संचालित श्री सहजानंद सेकेन्डरी एन्ड हायर सेकन्डरी स्कूल

नेशनल चिल्ड्रन सायन्स कोंग्रेस २००५ द्वारा आयोजित जिला स्तर का प्रोजेक्ट पसंदगी स्पर्धा मे अपनी स्कूल के धो.९ में अभ्यास करते हुए १. पवन सेवक, २. आस्था त्रिवेदी, ३. शैली पटेल, ४. अभय देसाईने "अहमदाबाद के वस्त्रापुर तलाव में प्रदूषण के कारण जैविक असरो के विषय में" गुजरात विद्यापीठ में अपना अभ्यास प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया था और गौरव के साथ राज्य कक्षा पर स्पर्धा के लिए उसकी पसंदगी की गयी थी। ता. २२-११-०६ के दिन प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया गया था। स्कूल के विज्ञान शिक्षकश्री पंकज ओझा के मार्गदर्शन अनुसार प्रोजेक्ट तैयार किया गया था। जिसे जिला स्तर पर भी बहुत प्रशंसा प्राप्त हुई थी। जिसे संदेश और राजस्थान पत्रिका के दैनिक न्यूजमें विस्तारपूर्वक प्रकाशित किया गया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री स्कूल की एवं संस्था की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु आशीर्वाद प्रदान करते हैं। *- प्रिन्सीपाल श्री सहजानंद सेकेन्डरी स्कूल*

वडुश्री स्वामिनारायण मंदिर और हनुमानजी मंदिर में पाटोत्सव मनाया गया

दंढाव्य प्रदेश के मुख्य गाँव वडु श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री हनुमानजी मंदिर के पाटोत्सव के उपलक्ष्य में त्रिदिनात्मक काव्य की कथा शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी के वक्तापद पर हुई थी। ता. २७-११-०६ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे तब गाँव के समस्त हरिभक्तों और संत मंडलने पुष्पहार से स्वागत-उत्सव किया था।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने मंदिर पधारकर पाटोत्सव अन्नकूट की आरती उतारी थी। उसके बाद श्री कष्टभंजन देव

मंदिर में श्री कष्टभंजन प्रवेशद्वार का खात मुहूर्त अपने वरद् हाथों से करके यज्ञ की पूर्णाहुति की थी । उसी प्रकार बहनो के मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारने पधारे थे । अंतिम में हरिभक्तों के प्रेम के वश होकर थोड़े हरिभक्तों के घर पदार्पण करके हरिभक्तों का घर तीर्थस्म बनाया था ।

पाटोत्सव के मुख्य यजमान पद का दिव्य लाभ प.भ. ईश्वरभाई भगवानदास पटेल के परिवारने लेकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया था ।

श्री नरनारायणदेव प्रवेशद्वार का नामाभिधान तथा सौजन्य हेतु रु। १०,५१,०००-०० का महादान प.भ. पटेल सोमदास बाजीदास के परिवारने करके अलौकिक लाभ प्राप्त किया था । श्री स्वामिनारायण म्युझियम में भी हरिभक्तों ने अधिक सेवा की है । समग्र उत्सव में वडनगर से शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी और शास्त्री विश्वप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन अनुसार श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और गाँव के समस्त हरिभक्तों ने सुंदर सेवा प्रदान की थी । *- प्रवीणभाई टी. पटेल*

सुरेन्द्रनगर मंदिर का प्रथम वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ आज्ञा आशीर्वाद तथा पू. बडे महाराजश्री के शुभ सानिध्य में यहाँ के महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से प्रथम वार्षिक पाटोत्सव कार्तिक वद-२ (द्वितीया) को भव्यता से मनाया गया । इस प्रसंग पर पंचदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाह पारायण शास्त्री रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर हुई । जिस के यजमान तथा पाटोत्सव के मुख्य यजमान पद पर जसापर के प.भ. ठाकरशीभाई जेठाभाई चलसाणीया परिवार थे । कार्तिक सुद-२ के दिन पू. बडे महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी का महाभिषेक अन्नकूट आरती, श्रीहरि यागकी पूर्णाहुति तथा मुख्य खंड में श्री राधाकृष्णदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज तथा श्री नरनारायणदेव के सुवर्ण सिंहासन का उद्घाटन किया गया । इस प्रसंग पर अहमदाबाद, मूली, हरिद्वार, चराडवा, ध्रांगध्रा आदि धामो से संत गण पधारे थे । तथा सांख्ययोगी कमलाबा के आमंत्रण को मान देकर पू. बडी गादीवालाश्री तथा बडी संख्या में सांख्ययोगी बाई पधारी थी । समग्र व्यवस्था विश्वस्वरूप स्वामी, व्रजवल्लभ स्वामी तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया था । *- शैलेन्द्रसिंह झाला*

हरिद्वार श्री स्वामिनारायणमंदिर में "श्रद्धांजलि सभा"

अक्षरधाम निवासी प.पू. माताजी को श्रद्धांजलि देने हेतु अपने हरिद्वार (गंगा के तट पर) श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. २४-१०-०६ को प्रातः भगवान श्रीहरि के सन्मुख सभा खंड में संतो हरिभक्तों ने श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून करके हृदय से भावपूर्वक श्रद्धांजलि समर्पित की थी । *- महंत स्वामी, श्री स्वामिनारायण मंदिर हरिद्वार*

मरतोली मंदिर का चौदहवाँ पाटोत्सव

आज से तेरह वर्ष पहले मरतोली (ता. विरमगाँव) मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर प.पू.ध.धु. आचार्य महराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के हाथों से प्राण प्रतिष्ठा की थी । उसी मंदिर का चौदहवाँ पाटोत्सव कार्तिक वद-१२ को भक्तिभावपूर्वक धूमधाम से मनाया गया ।

पाटोत्सव के यजमान मंदिर के कोठारी प.भ. श्री मणीभाई थे । इस प्रसंग पर समूह महापूजा तथा अन्नकूट तथा सत्संगी को भोजन करवाने का लाभ मणीलालभाई को प्राप्त हुआ था । गांधीनगर से शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजीने इस प्रसंग पर पधारकर सभा में कथा-वार्ता का लाभ दिया था । *- विष्णुभाई पटेल*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

सीडनी श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O. ओस्ट्रेलिया चेप्टर)

सीडनी में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चल रही है । नीचे लिखित हरिभक्तों की तरफ से सत्संग सभा का आयोजन किया गया । प.भ. रजनीकांत पटेल, प.भ. चंद्रकांतभाई पटेल, प.भ. धर्मेशभाई, प.भ. कृणालभाई पटेल, प.भ. सचीन पटेल, प.भ. अमीतभाई, प.भ. डिम्पेसभाई, प.भ. चिरागभाई, प.भ. महेन्द्रभाई अमीन आदि हरिभक्तोने यजमान पद का लाभ लिया था । दिपावली को अन्नकूट भिन्न-भिन्न पकवान घर से बहने बनाकर यहाँ लाई थी और उसका अन्नकूट किया गया था । समस्त सभा में हरिभक्त अधिकमात्रा में उपस्थित रहकर कथा-वार्ता, नित्य नियम धूनभजन आदि करके श्री स्वामिनारायण भगवान को प्रसन्न किये थे । भुज के अपने संत स.गु. स्वामी घनश्यामजीवनदासजी के अक्षरवास के निमित्त महामंत्र धुन की गई थी ।

- तेजस बी. पटेल

बुवी मेरीलेन्ड (वोशिंग्टन डी.सी. I.S.S.O. चेप्टर)

२१ अक्टूबर शनिवार की शाम को ५-०० बजे सत्संग सभा की गयी थी । जिस में वचनामृत (२७३) वाचन, भजन, कीर्तन, नित्य नियम, आरती-भोग हरिभक्तोंने समूह में किया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग प्रवृत्ति अच्छी चलती है ।

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावपूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदाबाद-माणेकबाग : प.भ. डाह्याभाई जगजीवभाई पटेल (निरमावाले गाँव अखियाणा) जो सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान और वर्षो से कालुपुरमंदिर में पोछा लगाने और धून-भजन करने की सेवा भावना वाले उकाखाचर जैसा उनका अंग था । उनके अक्षरवास से सत्संगमें "नीची टेल मले तो माने मोटा भाग्य जो" ऐसे भक्त की कमी उत्पन्न सत्संग में उत्पन्न हुई है । अक्षरवास ता. ९-११-२००६.

अहमदाबाद-मेघाणीनगर : अपने कालुपुर मंदिर में बच्चों के लिए सभा का कई वर्षो से संचालन संभालने वाले प.भ. हरिप्रसाद महाशंकर जोषी ता. ११-११-२००६ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये ।

बावला : प.भ. नीगनभाई के बडे भाई प.भ. कनैयालाल हरजीवनदास ता. ९-११-२००६ के दिन श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये ।

अहमदाबाद-वहेलालवाले : प.भ. कनुभाई हरिभाई श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए ।

अहमदाबाद-सरसपुर : अपने सरसपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठारी (ट्रस्टी) प.भ. रमेशचंद्र शंकरलाल गज्जर श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हो गये ।



श्री जन्मभूमि में बिराजमान श्री घनश्याम महाराज के समक्ष अन्नकूट दर्शन ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर में ठाकुरजी समक्ष अन्नकूट दर्शन ।



ऐतिहासिक नोंधपात्र २२५ किलो की के
काटते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (यु.एस.ए.) में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का प्राकट्यत्सव धूमधाम से मनाया गया ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (यु.एस.ए.) में सभा में धून-भजन में तन्मय हरिभक्तगण ।



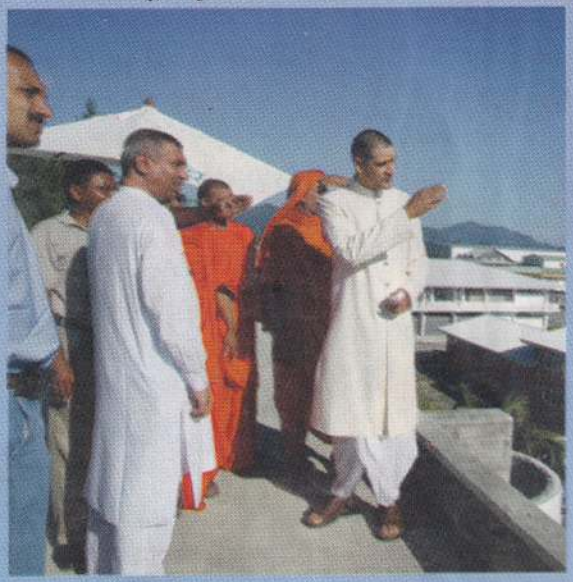
छपैया की परिक्रमा में हजारो की संख्या में हरिभक्तों ने भाग लिया था ।



नारणघाट मंदिर "सहजानंद चरित्र" पुस्तक का विमोचन करते हुए प.पू. महाराजश्री ।



सिसल्स मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की आरती करते हुए अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



एलाईड बिल्डर्स योजित कथा का प्रारंभ हो रहा है ।



सिसल्स मंदिर में प.पू. महाराजश्री के दर्शन हेतु पधारे हुए हरिभक्तों की सभा ।



मोरेशीयस मंदिर में प.पू. महाराजश्री के सानिध्य में यजमान के. के. पटेल और परिवार ।



एलाईड बिल्डर्स की साईटो का निरीक्षण करते हुए अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



एलाईड बिल्डर्सवाले प.भ. श्री हरिशभाई तथा प.भ. प्रविणभाई प.पू. महाराजश्री की आरती उतार ते हुए ।